शुद्ध आम्नाय जैनागार प्रक्रिया

विज्ञापन

[illegible] हो कि यह शुद्धआम्नायजैनागार प्रक्रिया मैंने बड़े श्रम से तैयार करके छपवाई है इसमें जैन मंदिर [illegible]याँ पच्चीस प्रकरण का वर्णन की है सर्व भव्य जनों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को आद्योपान्त [illegible]वलोकन करें और पुत्र पौत्रादिकों को भी पठन करावें इसका अवलोकन शुद्धआम्नाय की विधी में निपुणता का कारण है अब गाढ़ धर्म में प्रीति उत्पन्न करने वाला है सम्पूर्ण सिथिलाचार का बिध्वंशन [illegible] सुख का देने वाला है जैन मत का रहस्य इस ही के उपकार से पावेंगे ॥

शुद्ध आम्नाय जैनागा

जिसको

दुलीचन्द स्वरस्वती सदन सम्पादक दि

आम्नाय गृहत्यागी जयपुर निवासी ने

ड़े श्रम से परोपकारार्थ तैयार की है

चिन्तामणि यंत्रालय शहर फ़र्रुखा

प्रथमबार ३०० पु०

न्थ की पीठिका लिखिये है। तहाँ

और सुक्ख की प्राप्ति की वांछा करते हैं

। तहाँ निश्चय धर्म तो आत्मा क

र धर्म है। सो क्रिया विवेक पूर्वक

किया है। सो समस्त अधर्म रू

ग्रन्थनि तैं। तथा श्रावकाचा

न्थों की स्वाध्याय विशेष बुद्धि

ा है। और बहुत काल लगा

चार मेटि कल्याण की प्राप्ति

र्म सम्बन्धिनी क्रियानि दे

न करने से समस्त यत्न

। यह ग्रन्थ धर्म तथा जा

ने योग्य है। सो इस ग्रन

अर्थ। ग्रन्थकी परिसमाप्ति के अर्थी। अपने इष्ट कौं नमस्कार करि ग्रन्थ की पीठि का लिखिये हे। तहाँ प्र
थम ही यह वरणन करिये है। कि समस्त प्राणी दुक्ख का नाश और सुक्ख की प्राप्ति की बाँछा करते हैं
सो सुख धर्म से होता है। सो धर्म निश्चय व्यवहार करि दोय प्रकार है। तहाँ निश्चय धर्म तो आत्मा का
यथार्थ परिणाम है। और तिस के साधन भूत क्रियाँ हैं। सो व्यवहार धर्म है। सो क्रिया विवेक पूर्वक
यत्नाचार सहित होय तदि धर्म रूप है। और जो विवेक यत्न रहित क्रिया है। सो समस्त अधर्म रू
ही है। सो क्रियाँन के यत्न की विधि मूलाचारादि यत्याचार के वृहत् ग्रन्थनि तैं। तथा श्रावकाचा
दि आचार ग्रन्थनि के स्वाध्याय करने से प्राप्ति होती है। सो इन ग्रन्थों की स्वाध्याय विशेष बुधि
विशेष काल बिना हो सक्ती नहीं। सो इन पंचम काल में बुद्धि की न्यूनता है। और बहुत काल लगाने
की थिरता नहीं है इसी से सिथिलाचारी हो रहे हैं। तिनका सिथलाचार मेटि कल्याण की प्राप्ति
होने रूप उपकार बुद्धि करि पूर्वोक्त ग्रन्थनिका रहस्य लेय संक्षेप तें धर्म सम्बन्धिनी क्रियाँनि के
यत्न की बिधि का बरणन करते हैं। यह सुगम संक्षेप रूप ग्रन्थके अभ्यास करने से समस्त यत्न की
बिधि का ज्ञाता हो कर आचरण करने से महान पुण्य का संचय होगा। यह ग्रन्थ धर्म तथा जा
की उन्नती दिखलाने वाला है। समस्त मतावलम्बीयों को ग्रहण करने योग्य है। सो इस ग्रन्

को आद्योपांत समस्त पढ़ कर यथास्थानीय क्रियों का आच रण करना योग्य है इसको पढ़ने में क्रि- यों की कठिनाई जानि पढ़ने में प्रमादी मति हो हू। बिचार करो कि ग्रन्थ कर्त्ता ने बड़े परिश्रम करि। अनेक ग्रन्थ निकार हस्य लेय ग्रन्थ रचना करी। और आपको पढ़ने मात्र ही में खेद है। यह बड़े आश्चर्य्य की बात। तथा क्रियों की सिथलता होते धर्म का लोप होय है। और यत्न पूर्वक क्रिया के होने से चिर काल पर्यन्त धर्म की थिरता रहेगी। क्योंकि क्रिया की उच्चता धर्म की उन्नती को दिखाती है॥ अब इस ग्रन्थ में पच्चीस प्रकर्ण रूप व्याख्यौ है। तिनका बर्णन करते हैं॥ तहाँ प्रथम ही धर्म की प्राप्ति के अर्थ शास्त्र का उपदेश होना योग्य है। सो उपदेश वक्ता के मुखार बिन्द से होता है। इस वास्ते प्रथम प्रकरण में सद्वक्ता के गुणन का व्याख्यान किया है॥१॥ और वक्ता करि किया उपदेश के धारण योग्य श्रोता अवश्य ही चाहिये। क्योंकि पात्र बिना पदार्थ कहाँ तिष्ठै। इस वास्ते द्वितीय प्रकरण में श्रोतानि का व्याख्यान किया है॥२॥ और वक्ता श्रोतानि करि प्रवर्त्यो जो शास्त्र पदेश तिसकी क्रिया की विधि अवश्य जानने योग्य है। इस कारण तृतीय प्रकर्ण में शास्त्र बाँचने की क्रिया का व्याख्यान है॥३॥ और शास्त्र बाँचना जो है। सो वक्ता श्रोतानि के मंदिर में स्थिति होने से

ता है। और मंदिर जी में स्थिति होने में प्रमादज नित कई प्रकार के दोष उत्पन्न होते है
न दोषों को त्यागने के अर्थ चतुर्थ प्रकर्ण में मन्दिर गत दोषों का व्याख्यान किया है
४॥ और जो धर्मात्मा मन्दिर जी में आवै सो अपने गृह से शुद्ध होकर आवें। इस वा
ञ्चम प्रकर्ण में गृह सम्बन्धी स्नान सामायिकादि क्रियों का व्याख्यान है ॥५॥ और
मन्दिर जाते हैं सो पूजन योग्य द्रव्य भेट को लेके जाते हैं। इस वास्ते षष्ठम प्रक
र्ण में सामग्री ले जाने की क्रिया की बर्णन है ॥६॥ और मन्दिर में पहुँच कर प्रथम मन्दि
स्थानों को मार्जन करने की क्रिया का बर्णन है ॥७॥ और तिस पीछे पूजन के अर्थ स्न
कारना अवश्य है इस वास्ते अष्टम प्रकर्ण में पूजन के अर्थ स्नान करने की क्रिया क
याख्यान है ॥८॥ और स्नान के उपरांत पूजन के अर्थ जल ल्याना अवश्य है ॥ तारे
नवम प्रकर्ण में जल ल्याने की क्रिया का व्याख्यान है ॥९॥ और तिस पीछे भगवान का
प्रक्षाल करना अवश्य ही है तिस वास्ते दसवें प्रकर्ण में प्रक्षाल करने की क्रिया का
व्याख्यान है ॥१०॥ और तिस के उपरांत गन्धोदक की विधि अवश्य चाहिये। इसका
रण एकादश में प्रकर्ण में गन्धोदक की क्रिया का बर्णन है ॥११॥ और जो जैनी पुरुष वा

स्त्री। मन्दिर में आये हैं। सो दर्शन पूजन के अभिप्राय से आये हैं। इस वास्ते बारहवें प्रकर्ण में दर्शन करने की। क्रिया का वर्णन है॥ १२॥ दर्शन करने के उपरांत पूजन करने का अभिप्राय में प्रथम सामग्री बनानी चाहिये। इस कारण तेरहवें प्रकर्ण में पूजन के निमित्त सामग्री बनाने की क्रिया का वर्णन है॥ १३॥ तदनन्तर पूजन के निमित्त। चौकी पट्टा अवश्य चाहिये। इस कारण चौदहवें प्रकरण में। पूजन योग्य चौकी। लम्बाई। उँचाई तथा धरने उठाने की क्रिया का बर्णन है॥ १४॥ तदनन्तर पन्द्रहवें प्रकरण में पूजन द्रव्यों के भिन्न भिन्न पाठों का बर्णन॥ १५॥ तदनन्तर षोडशवें प्रकरण में स्थापना करने की विधि तथा विसर्ज्जन उपरांत स्थापना के चाँवलों को भस्म करने की क्रिया का है॥ १६॥ तदनन्तर पूजन के प्रकरण में मण्डल की आवश्यकता जानि सत्रहवें प्रकर्णमें मण्डल माँडने की सामग्री तथा क्रियें का बर्णन है॥ १७॥ तदनन्तर अठारहवें प्रकर्ण में निर्माल्य द्रव्य का स्वरूप तथा निर्माल्य द्रव्य खाने वालें को मन्दिर में नहीं जाने देने का समस्त बर्णन है॥ १८॥ तदनन्तर उगणीसवें प्रकरण में अष्ट द्रव्य के चढ़ाने में कितने एक मनुष्य झगड़ा करते हैं तिनके निर्णय का कथन है॥ १९॥ तद-

नन्तर बीसवें प्रकरण में जैनी बिना अन्य के हस्त से ल्याया जल से पूजन प्रक्षाल वा स्नान के नि-
षेध का वर्णन है ॥ २०॥ तदनन्तर इक्कीसवें प्रकरण विषे पूजन के वास्ते चावल तथा खोप
जिनमें जीवोत्पत्ति होगई तिनके लाने का निषेध । और निर्दोष उत्तम लाने की क्रिया का वर्णन है
॥२१॥ तदनन्तर बाईसवें प्रकरण विषे पूजन के निमित्त नैवेद्य के वास्ते घृत बनाने की क्रिय-
का वर्णन है ॥२२॥ तदनन्तर तेईसवें प्रकरण विषय नैवेद्य बनाने की क्रिया का वर्णन है॥
तिस उपरांत चौवीसवें प्रकरण विषय पूजन के सामान रखने के स्थान का तथा पूजन के उप-
करण पात्रादिकों का न्यारा न्यारा वर्णन है ॥२४॥ तिस पीछे पच्चीसवें प्रकरण विषे ग्रन्थ
बनाने का सम्बन्ध का वर्णन करि ग्रन्थ को परि समाप्त किया है। इस प्रकार समस्त प्रकरणों
आद्योपांत पढ़ कर सिथिलाचार छोड़ि उत्तम क्रियों से यत्नाचार पूर्वक जिनेन्द्र का पूजन दर्श-
न करो या प्रकार भूमिका वर्णन समाप्त किया ॥ **अथ सत्य वक्ता के लक्षण कहते हैं॥**
शुद्धोत्तम वंशोद्भव रूपवान चतुर्दश विद्या निधान धर्म शील अध्यात्मरत तत्व वेत्ता शौचा-
चार वान विचक्षण गुण धाम इन्द्रिय विषय विरक्त भक्ति वान गुरु शास्त्र सत्य श्रद्धावान हि-
तमित मधुर भाषी द्वादश व्रत सौचा चारी परोपकारी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद हिंसादि

दोष रहित यमनियम धारी संशयहारी परमनोहारी त्रैकालिक व्यवहार वेत्ता सर्वजन दुरित
हर्ता चतुरानुयोग वेत्ता रत्नत्रय प्रतिपादक क्षमावान् दयावान् यशोवान् धैर्यवान् प्रश्न
से पूर्व ही उत्तर जानने वाला इत्यादि गुणयुक्त वक्ता होय सो श्रोतान का भ्रम मेटि धर्म ग्रह-
ण करावै है तिनका लक्षण दिखाते हैं और जो वक्ता हीन वंश तथा कलंकित वंश में उत्पन्न
भया होय तो सभा में माननीय नहीं होय तातें प्रताप सभा में प्रकाशित नहीं होवै कलंक
करि रहित जाका वंश परंपराय आज तक चला आया होय जिन आज्ञा भंग करने का जाकै भ-
य होय ऐसा शुद्धोत्तम वंश में उत्पन्न भया वक्ता होना योग्य है और कुरूप होय ता को श
ब्द ही श्रेष्ट नाहीं लगै जातें रूपवान होना चाहियें और जिसमें अध्यात्म विद्या संस्कृत प्राकृ
त देशभाषा लौकिक और कला चतुराई इत्यादि विद्या न होय सो श्रोतान को यथार्थ सम-
झाय सकै नाहीं तातें चतुर्दश विद्या निधान होना अवश्य है और जो आप ही तत्व कों न जा-
नैं तौ अन्य श्रोतान को तत्व का उपदेश कैसे करै तातें तत्व वेत्ता होना चाहियै और वक्ता अ
धर्मी कुशीली मिथ्या दृष्टी होय और अपवित्र आचरण करै सो धर्म के न जाने वाला है तो-
उसके मुख का उपदेश को न सुनै और कौन धर्म को ग्रहण करै इसवास्ते धर्मशील अध्यात्म

रत और शौचाचारवान होना अवश्य चाहिये और मूर्ख होय सो कहा उपदेश करै
तातें विचक्षण होना चाहिये और जामैं सम्यग्ज्ञानादि गुण नहीं सो श्रोतानि के सम्य
ग्ज्ञान की प्राप्ति कैसें करै तातें सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रादि गुण तथा बुद्धि ऋद्धिकों
आदि लेय अनेक गुण धाम होना अवश्य है जो इन्द्रिय बिषय लम्पटी है सो इन्द्रिय
विषयनि का त्याग कैसें करावे तातें पञ्चेन्द्रिय विषय विरक्त होना योग्य है और
जिसकै देव गुरु शास्त्र की भक्ति नहीं सो उनकी आज्ञा कैसें प्रवर्त्तावे तातें भक्तिवान
होना चाहिये और जाकौ देव गुरु शास्त्र का दृढ़ श्रद्धान नहीं होय तो अन्य कै श्र-
द्धान की दृढ़ता कैसें करावे तातें देव गुरु शास्त्र का सत्यश्रद्धानी होना योग्य है
औरजो अकल्याण रूपी बचन होय ताहि कौन ग्रहण करै और मरयादिक
निकों कटुक ऐसा बचन होय तौ कौन श्रवण करै तातें वक्ता हित मित मधु
र्षी होना चाहियै और आप ही अव्रती होय सो अन्य कूं व्रत ग्रहण कैसें करावै तातें
द्वादश व्रतनि का धारक वक्ता श्लाघ्य है जाकै परकै उपकारक बुद्धी नहीं होय सो
अन्य कूँ उपदेश क्यों करै तातें परोपकारी होना चाहियै औरजो कामी क्रोधी सो

भी मोही मद हिंसादि दोष संयुक्त होय सो अन्य कौं उपदेश देय निर्दोष कैसें करै और जाकै यम कहिये यावज्जीव त्याग और नियम कहिये काल की मर्यादा रूप त्याग जाकै नहीं होय सो अन्य कौं यम नियम रूप त्याग का उपदेश करि कैसें ग्रहण करावै तातैं यम नियम का धारी होना योग्य है और जिसने गुरु आम्नाय पूर्वक निस्संदेह वस्तु स्वरूप जान्या होय सो अन्य कूं स्पष्ट मिष्ट अक्षर करि प्रमाण नय निक्षेप निकरि युक्ति तै अनेक प्रकार उदाहरण देता संता ऐसैं व्याख्यान करै जिसमैं श्रोतानि कै किसी प्रकार संदेह न रहै क्योंकि वस्तु स्वरूप मैं सन्देह रहतै सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति कैसें होयगी जो कार्य होय सो कारण सैं होय है सो यहाँ सम्यग्ज्ञान को उत्पादक निमित्त कारण मुख्यपनै वक्ता ही है यातैं सर्व संशय हारी ही सराहने योग्य है और जिसकी वाणी कर्ण प्रिय नहीं होय तो श्रवण करने की रुचि कैसें उपजावै और रुचि बिनां श्रवण करने कों कौन आवै तथा तहाँ उपयोग कौन लगावै तब क्रिया सनिस्फल होय तातैं सुस्वर कण्ठ का धारक पर मनोहारी होना चाहिये और जानैं भूत भविष्यत वर्त्तमान काल की लोक व्यवहार की रीति अच्छी तरह नहीं जानी होय सो लोक विरुद्ध कथनी करि धर्म की अप्रमाणता दिखावै और श्रो-

तानि का अहित करै तातैं त्रैकालिक व्यवहार वेत्ता होना चाहिये और जिसमैं पाप मल कैं दूर करने की सामर्थ्य नहीं ऐसा मिथ्या उपदेश करि तथा ऐसे वक्तानि करि कहा साध्य है अपूठा अहित करने वाला है तातैं सम्यग्ज्ञानी यथार्थ धर्म का उपदेश देने वाला पाप मल का दूर करने वाला सर्वजन दुरित छेत्ता ही वक्ता ग्रहण करने योग्य है और जिसने प्रमाण नय निक्षेपनि का गुणस्थान मार्गणास्थान निका तीन लोक का कर्म प्रकृतिनिका आचारादि च्यारों अनुयोग का स्वरूप नहीं जान्यां होय और कोई प्रश्न करै तो उस प्रश्न सम्बन्धी अनुयोग के जाने बिना यथार्थ उत्तर कैसे देवैं तातैं चतुरानुयोग वेत्ता होना योग्य है और रत्न त्रय स्वरूप मोक्ष मार्ग बिना अन्य लौकिक कार्य साधने रूप उपदेश करै ताकरि कहा साध्य है तातैं रत्नत्रय प्रतिपादक ही वक्ता कल्याण करै है और जो वक्ता क्रोधी होय तो श्रोताजन प्रश्न करने तैं डरै तब सन्देह दूरि कैसैं होवे तातैं क्षमावान होना योग्य है और जिसका अभिप्राय हित करने का है और कोई उपदेश क्रोध रूप होय करि भी करै तौभी क्षमा ही का गुणकार समझना चाहिये और जाके दया ही नहीं होय सो संसार मैं पड़तें प्राणीनि का दुःख देखि ताके मेटने का उपाय स्वरूप उपदेश कैसें करै क्यों

अभिप्राय बिना यथार्थ क्रिया होती नाहीं तातैं दयाकरि जाका हृदय आला भया होय ताका ऐसा अभिप्राय रहै है कि कोऊ रीति सैं अने काँत्त धर्मका यथावत् स्वरूप श्रोतानि के हृदय में प्रवेश करै कोऊ प्रकार संसार देह भोगानि तैं राग घटै कोऊ प्रकार भेदविज्ञान प्रगट होय ऐसा दयावानही सत्यार्थ धर्मका उपदेश कर सकै है और जाका अपयश फैला होय ताहि सुनि कोई निकट भी न जावे तब उपदेशादि प्रवृति कैसें होय तातैं जाका व्यवहार प्रवृत्ति मैं परमार्थ में धर्म्म में लेने मैं देने मैं आजीवकादि वनज मैं बोलने मैं भोजनादि क्रियानि मैं ऐसा उज्जल यश प्रगट होरहा होय जिसकी बड़े बड़े ज्ञानी स्तुति करैं ताप्रभाव कों देखि सुनि करि दूर देशान्तरों सें श्रोताजन धर्मश्रवण करने को चले आवैं यातैं यशवान होना योग्य है और जो श्रोतानि के प्रश्ननि करि आकुलित होजाय ताकै प्रश्न के उत्तर देने की बुद्धि नहीं उपजै और जाना भया भी उत्तर विस्मरण होजावे और प्रश्न के होतैं उत्तर देने मैं देरी होय तो सभा मैं क्षोभ हो जावै तातैं प्रश्न के पूर्वेही जानने वाला होय धैर्यवान होय उत्तर देवे तथा आपही नाना प्रकार प्रश्न उठाय आगाऊ ही प्रश्न करने वालों का मार्ग मुद्रित करि आपही उत्तर करै तब

श्रोता जन संतुष्ट होय धर्म्म कों दृढ़ धारण करे इत्यादि अनेक गुण युक्त वक्ता होय सो संशय मेटि ज्ञान उपजाय श्रोतानि का कल्याण करे है॥ **असत्यवक्ता के लक्षण कहते हैं**॥ विकलश्रुती १ क्रोधी २ मानी ३ लोभी ४ मायावी ५ हीनाचारी ६ अभक्ष्य भक्षी ७ मद्यपानी ८ विषयलम्पटी ९ अत्यारम्भी १० ख्यात लाभ पूजा इच्छक ११ इत्यादि असमीचीन गुणन का धारक॥ अबार वर्त्तमान काल में थोड़ासा प्राकृत संस्कृत व्याकरण काव्य न्याय के श्लोक ऐसेही भाषा छन्द चौपाई कवित्त आदि थोड़ीसी विद्या कण्ठस्थ की होय बाँचने की चतुराई लोक रिझावने को सीखे अपना मान पोखने के अर्थ कोई कहै ये भी पढ़ा है और किसी सभा में शास्त्र बाँचे वहाँ कोई प्रश्न करे और उसका उत्तर न आवे जब अपना अपमान जान असत्यार्थ कों सत्यार्थ विपरीति अर्थ यदि वा तद्वा कहै प्रथम तो शास्त्राध्यन कम कीया होय द्वितीये बुद्धि की मंदता त्रितीय मान की अधिकता जो किंचित् अंश मात्र थोकी विद्या कंठस्थ की होय उस्से कहाँ तक पूरा पड़े और जिसके शास्त्र बाँचने वा विद्या पढ़ाने अथवा कोई धर्म कार्य कराने में आजीविका लगी होय और नाना प्रकार के मिष्टरस में ल्हालःसा हो वा घृत में वे इलाइची वासुगंधित वस्तु का

अनेक प्रकार के पक्वान्न व्यंजन आदि भोजन वा वस्त्र स्थान असवारी आदि अनेक प्रकार के विषय साधने की भोग सामग्री संसार के बढ़ाने वाली श्रोताओं के अभिप्राय के अनुसार रंजायमान करने वाली और जाके आपनाही प्रयोजन साधने का रात दिन फिकर बिलावस उस्त विपरीत भाव लगरहे हैं लोभी सत्यार्थ व्याख्यान न करै अपना अभिप्राय सधता दीसैं वैसाही अनेक प्रकार के कपट मायाचार सैं धनवान कौं ठीगै किसी कों तो क्या कहै किसीकों औरही कहै आपस मैं फूट कराय अपना प्रयोजन सिद्ध करै और कितनेक असत्य वक्ता ऐसे है जाके मिथ्यात्व अन्याय अभक्ष्य का त्यागही नहीं सप्त व्यसन के सेवने वाले बाबीस अभक्ष्य के खाने वाले अंगरेजों की मुसलमानों की अत्तारों की दवाओं में मास दारु सहत कस्तूरी गोरोचन रेगमाही बीरबहोटी हड्डी वा अनेक प्रकार के पक्षी तीर्यंचों के अंडे दवा में डाल के नीचजाति आक्रिया सें तैयार करते हैं और चाम के स्पर्श का घृत तेल जल वा हलवाई के दुकान की सर्व वस्तु दूध दही अनेक प्रकार की चलित वस्तु कन्द मूल गोभी आदि अनेक प्रकार के फूल खावै कंडे की बनी रसोई बीधा नाज का आटा रात्री का पीसा रात्री की बनाई रसोई खावै नीच जाती के हाथ का जल वा भोजन बनाया वा स्पर्श किया

अफीम॰ भाँग॰ माजूम॰ जरदा हुक्का पञ्चेन्द्रीय लम्पटी कामोत्पादक मद्यपाणी परस्त्री वे॰
श्या सक्ति अति आरंभी अति परीग्रही अतीव तृष्णावान कों कभी फुरसत मिले नहीं और शास्त्र
बाँचने वाले कों बुलाने जावे तो कहे आता हूँ अपने घर के काम करने लग जाय जो आवे तो
बख्त थोड़ के आवे श्रोताजन बैठे२ व्याकुल होयँ चले जावें और कितेक तो अपनी ख्याति
लाभ मान बड़ाई के अर्थ मूर्ख मनुष्यन में महंत बन के शास्त्र बाँचे और अन्याय के गुप्त का
म करे तो ऐसें उपदेश दातासें जीवों का कल्याण कैसे होवे सत्यार्थ धर्म का मार्ग कैसें चले
जो अपना प्रमाद मेट निज कल्याण न किया तो वाके तो उपदेश तें श्रोतानि का कल्याण
होना कैसे संभवै॥ **अथ श्रोताओं लक्षण लिखते हैं**॥ उत्तम मध्यम अधम इन
तीनों के नाम प्रथम उत्तम के नाम गो १ हंस २ रत्न परीक्षक ३ कसौटी ४ अग्नि ५ दर्पण ६
तुला ७ सूर्य ८ मध्यम श्रोता के नाम मृत्तिका १ शुक २ पवन ३ अधम श्रोता के नाम सर्प
१ मार्ज्जार २ जलौका ३ बक ४ वंकरा ५ दंशमसक ६ फूटा घट ७ शिला ८ चालनी ९ महिष
१०॥ **अथ उत्तम श्रोता के लक्षण कहते हैं**॥ गो स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें
गौ तृण को भक्षण करती है और उत्तम अमृत समान दुग्ध कों देती हैं तैसें श्रोता किञ्चित

धर्मोपदेश सुनैं और विशेष दया दान पूजादिक मैं प्रवर्त्तै १ हंसस्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसे हंस दुग्ध मिश्रित जल कों न्यारा करि दुग्ध का ग्रहण करै तैसें श्रोता पापोपदेशमिश्रित जो धर्मोपदेश है तिसकों न्यारा कर धर्मोपदेश ग्रहण करै २ रत्न परीक्षक स्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसें अनेक रत्नों कों देखि कै पृथक् पृथक क़ीमत करै तैसें श्रोता अनेक प्रकार उपदेश सुनि पृथक् २ निर्णय करै किसमैं बन्ध किससैं मोक्ष किसमैं पुण्य किसमैं पाप इसी का निर्णय करै ३ कसोटी स्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसें कसोटी से सुवर्ण की परीक्षा करै तैसैं श्रोता सत्य असत्य धर्म की परीक्षा करै ४ अग्नि स्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसें अग्निकु धातु कौं भस्म कर सुवर्ण कौं निर्मल करै तैसें श्रोता कर्ममैल का नाश करि आत्मा कौं निर्मल करै ५ दर्प्पण स्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसें दर्प्पण वस्तु का यथार्थ स्वरूप प्रगट करै ६ तुला स्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसें तुला जिस तरफ़ द्रव्य विशेष है उस तरफ झुकती है तैसें श्रोता जिस कार्य मैं पुण्य अधिक होय उस तरफ झुकता रहै ७ शूर्प्प स्वभाव श्रोताउसे कहते हैं जैसें शूर्प कूड़ा कचरा बाहिर करै तैसें श्रोता खोटा आचरण दूर करै॥ ८॥ **अथ मध्यम श्रोता के**

लक्षण कहते हैं॥ मृत्तिका स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें मृत्तिका जलके संयोग से मृदु हो जाती है जब जल सूख जाय फिर कठोर होय तैसें श्रोता धर्म कथा प्रसङ्ग के सुननें से प्रेम में मग्न हो जाय पश्चात् वैसा का वैसाही कठोर रहै शुक स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें शुक को पढाओ वैसाही पढ़ता है अपने विचार से पठनीय अपठनीय कों नहीं जानता है तैसें श्रोता अपनी बुद्धि विचार से धर्म अधर्म कों नहीं जानता जैसा सुनता है वैसाही बोलने लगता है २ पवन समान श्रोता उसे कहते हैं कि जब पवन गमन करे तब जहाँ तहाँ हरएक ठौर मार्ग में सुगन्ध वा दुर्गन्ध वस्तु कों ग्रहण करे विचार नाही करै है तैसें ही मध्यम श्रोता शुभाशुभ शास्त्र का उपदेश सुनै तैसाही ग्रहण करै है॥३॥ **अधम श्रोताओं के लक्षण लिखते हैं॥** सर्प स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें सर्प को उत्तम क्षीर पिलाओ परन्तु वो विषही कों उगलता है कारण कि सर्प जो कुछ खाता है सो सर्व विष हो जाता है तैसें श्रोताओं को वक्ता चाहे जितना धर्मोपदेश रूप अमृत पिलावे परन्तु वो श्रोता उलटा पापोपदेशही ग्रहण करै मार्जार स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें बिलाव मूसे की सिकार

निमित्त एक कोने में दबके गरीब सा बैठै है और अपनी सिकार को छोडे नहीं तैसें श्रोता धर्म्मोपदेश की सभा में एक तरफ कोनेंमें बैठे और वक्ता के उपदेशमें भूल चूककों देखे जिस वक्त वक्ता भूले उसी समय उछलके पडे ये मानो श्रोता दुष्ट स्वभावी के लक्षण है २ जलोका स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें जलोकाको दुग्ध भरे स्तन पर लगाने से वो दुग्ध को त्याग करके मलिन रुधिर ही का पान करती है तैसें श्रोताकों वक्ता धर्म्मोपदेश में लगावे परन्तु वो धर्म्मोपदेश बिलकुल नग्रहण करै हिंसादि पाप कियाही करै ॥३॥ बकस्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें बक सरोवर के किनारे पर जाय के बडी साधु वृत्ति कों धारण करके बैठता है मानों कोई ध्यानी बैठा होय परन्तु जहां कोई जीव जल केऊपर देखा फिर झट उसी समय पकड़के भक्षण कर लेता है दया भी किञ्चित नहीं धरताहै तैसें जो श्रोता लोगों के दिखाने निमित्त आत्म ध्यानी की ज्यों ध्यान लगाय सामायिक स्वाध्याय करै कपट कर धर्म्मोपदेश सुनें जो वक्ता धनवान होय तो वाकों अपना धर्मात्मा पणा दिषाय के धनकों हरै और श्रोता धनवान होयतो

वाकों धर्मात्मा पणों दिखाय कपट कर उसके धनकों हरे ॥४॥ अजा स्वभाव उसे कहते हैं जैसें अजा के शरीर में चाहे जितना सुगन्ध अतर कस्तूरी आदि लगावो परन्तु उसके शरीर से दुर्गन्ध ही निकसे हे तैसें श्रोता कों वक्ता अनेक धर्म्मोपदेश देवै परन्तु वक्ता ही की उलटी निन्दा करे अपना पाप स्वभाव कों न छोडे ५ दंशमशक स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें दुष्ट स्वभाव ज्ञान रहित दंश और मशक प्राणीयों को दंशित कर के दुःख देते हैं तैसें धर्म कथा के प्रसंग में बारम्बार बीच में कुतर्कों को करके वक्ता कों क्षुभित करे और श्रोताओं के मनों को भी क्षुभित करे है ॥६॥ महिष स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें महिष सरोवर के जल में जाय के सम्पूर्ण जल कों मलिन करता हे तैसें जो उत्तम धर्मिष्ट सज्जनों की सभा मैं जाय के खोटे खोटे कुतर्कों के प्रश्न उठाय उत्तम जनों की सभा कों क्षुभित करता हे ॥७॥ खण्डित घट स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसें खण्डित घट में भरे जल ठहरता नहीं सब निकसि जाय तैसें श्रोता कों चाहे जितना धर्म्मोपदेश देवै परन्तु उसके हृदय में एक भी ठहरे नहीं ॥८॥ शिला स्वभाव श्रोता उसे

कहते हैं जैसैं शिला मैं कोई पदार्थ असर न करै तैसैं श्रोता को चाहै जितना धर्मोपदेश करो परन्तु उसके मन मैं कोई धर्म्म का उपदेश असर नहीं करै ॥ ९ ॥ चालनी स्वभाव श्रोता उसे कहते हैं जैसैं चालनी आटे कों निकासै तुसका ग्रहण करै तैसैं श्रोता पुण्याश्रव कों निकासै पापाश्रव कों ग्रहण करै - ॥ १० ॥ = ॥

अथ शास्त्र बाँचने की क्रिया कों कहते हैं ॥ जिस मन्दिर मैं स्नान करके शुद्ध धोये वस्त्र धोती दुपट्टे अलग न्यारे रक्खे हैं उसमैं से पहर के शास्त्र बाँचै तिस मन्दिर मैं इस मूजिब क्रिया चाहिए प्रथम तो शास्त्र बाञ्चने वाले की चटाई जुदी चाहिए और श्रोतान के बैठने की बिछायत जुदी चाहिए दोनों तरफ श्रोता अलग बैठैं और बीच मैं शुद्ध धुयी बिछायत होवे उसे कोई भीटै नहीं और शास्त्र बाँचने वाला शास्त्र जी की गद्दी बीच मैं अपने हस्त से बिछावे फिर हस्त धोके चौकी ऊपर पलासना अर्थात् चौकी पोस धरै फिर विनय संयुक्त शास्त्र जी सावधानी से विराजमान करै तब श्रोता जन पुरुष वा स्त्री खड़े होकर पञ्चाङ्ग नमस्कार करै फिर बैठ के शास्त्र सुनै और शास्त्र बाँचे पीछे बाँचने वाला शास्त्र को ले

खड़ा होकै जिधर की तरफ शास्त्र विराजमान करै उधर जाकर नमस्कार करै
फिर शास्त्र बाँचने वाला गद्दी चौकी आदि उठाय अलग ऊँच स्थान मैं धरै अथ
वा खूँटीकै लटकावै स्नान करे बिना धुये कपड़े पहरे बिना कोई भीटै नहीं जिस
मन्दिर मैं इस मूजिब क्रिया करै वहाँ स्नान करि धुये कपड़े पहर शास्त्र बाँचना उ
चित है और दूसरी रीति इससे विपरीत है सो सुनों जिस मन्दिर मैं शास्त्र वाले की
और श्रोतानि की बिछायत एक है उसही बिछोने ऊपर शास्त्र की गद्दी बिछायकै
चौकीको धरै और वक्ता स्नान करि शुद्ध वस्त्र पहर के उस ही बिछायत पर बैठ कै
शास्त्र बाँचै सो उनका स्नान करना वा शुद्ध धुये कपड़े पहरना वृथा है पाखण्ड
ही जानना और इनसैं जियादा विपरीत तीसरी क्रिया है उसे कहते हैं इसही मू
जब श्रोतान की और वक्ता की और शास्त्र की बिछायत तो एक ही है और वक्ता तो
स्नान करै ही नहीं और कपड़े शुद्ध धुये पहरे ही नहीं और दूसरे मूर्ख मनुष्यकों
स्नान करवाय कपड़े शुद्ध पहराय उसही के हस्त सैं शास्त्र विराजमान कराय उ
सही के हस्त सैं शास्त्र के पत्र उथलावै और चौकी अगाड़ी वक्ता बैठकै चौकीको

अपने कपड़े से भीड़ता जावै और जो शास्त्र जी के पत्र अथवा मण्डल विधान पूजन के पत्र उथलने वाले पुरुष कों थिरता नहीं होवै तो वो शास्त्र जी कों चौकी पर विराजमान करके चल्या जावै फिर बाँचने वाला चीमटी से पत्र उथल के बाँच्या करै सो यह प्रमाद अनर्थ का मूल है कि जिस तरह। रसोई में हर एक मनुष्य जैसे तैसे खराब कपड़े पहरे चीमटे से जो परोसगारी करै तो वा मैं कहा दूषण है फिर रसोई उज्जलक्रिया से बनाने सैं क्या प्रयोजन है और वक्ता होय सो तो स्नान करै हीनहीं कपड़े धुये पहरै ही नहीं और दूसरे मूर्ख मनुष्य कों स्नान कर वाय धुये कपड़े पहराय शास्त्रजी के पत्र उथलाय शास्त्र बाँचै सो वक्ता को कहा पुण्य भया और कैसैं कर्म की निर्ज्जरा भई प्रमाद के दोषतैं महापाप का भागी भया और जो अपना प्रमाद मेटि निज कल्याण नहीं किया तो वाके उपदेश तैं श्रोता का कल्याण होना कैसे संभवै तिस वास्तैं अपने कल्याण के इच्छक पुरुषन कों लोक रिझावन क्रिया करणा उचित नहीं॥ इति शास्त्र बाँचने की क्रिया समाप्त॥

॥ अथानन्तर मन्दिर में तीव्र पाप बन्ध होने के कारण सर्व देश में न्यारे न्यारे होते हैं ॥ इन सर्व को एकत्र कर के संक्षेप लिखते हैं और स्थान में अशुभ पाप क्रिया करी होय ताका जो बन्ध हुआ सो मन्दिर में आय के सर्वज्ञ वीतराग देव के आगे आलोचना करि फिर प्रायश्चित्त लेके शुद्ध होते हैं और जो मन्दिर में ना धर्म कार्य में कीया पाप वज्रलेप होय है इनके निमित्त से नरक निगोद जाते हैं इनका बर्णन न्यारा न्यारा करते हैं नीच वस्तु नीच जाति को मन्दिर के किसी मकान में जाने नहीं दे उसके निषेध को कहते हैं कितनेक हठग्राही भ्रष्ट आचरण करने वाले को समझाने के अर्थ कहते हैं चाम के ताँत के हड्डी के हाथी दन्त के बाजे मृदङ्ग तबला सारङ्गी सितार बीन ढोलकी खञ्जड़ी नगारे इत्यादि अनेक प्रकार के बाजे हैं सो अशुद्ध अशुचि अपवित्र निन्द्य छूने योग्य नहीं ऐसी वस्तु मन्दिर के किसी मकान में नहीं जाने दे और मांस दारु वा पक्षी के अण्डे खाने पीने वाले नीच काम करने वाले नीच जाती जो कोली चमार खटीक डूम मातङ्ग मुसलमान कलाल मोची रेगर धीवर कहार भोई आदि बहुत सी नीच जाति है इनको

मन्दिर के किसी मकानमें नजाने दे और तिर्यञ्च जीवोंको मार के उसके चामको उधेड़ और इनके मांसमें से निकाली आंत उसकी बनाई तांत सो सारङ्गी सतार आदि कों लगाई और कच्चा चाम कोंलेके सारङ्गी मृदंग तबला ढोलकी खञ्जरी नगारे आदिकों लगाते हैं और मांस कों खाते हैं तब तिर्यञ्च मरता है उसे कोई मनुष्य छूवै तौ स्नान करते हैं और श्रावक भोजन जीमता होय और उस समय तिर्यञ्च आदि मरने के समाचार सुनते ही तत्काल भोजन छोड़ते हैं और ऊन के वस्त्र दुशाले बनात आदि वा कोडी सीप शङ्ख हाथी दन्त हड्डी सहत मादिरा चाम आदि अपवित्र भोजन के स्थान में आवे तो तत्काल भोजन सहित सर्व पात्रों को बाहिर निकास फिर उस स्थान कों और भोजन के पात्रों कों यथोक्त शुद्ध करते हैं और जो श्रावक गृहस्थ धर्मात्मा व्रती उत्तम बंश के पुरुष हैं सो चर्म हाड वा ऊनके वस्त्र आदि अशुद्ध वस्तु कों तथा मांस दारु खाने पीने वालों कों अपने मकान में नहीं आने देते हैं सो सर्वज्ञ वीतराग सर्वदर्शी का मन्दिर महा पवित्र सर्वथा प्रकार शुद्ध है तो इन में ऐसी निन्द्य अपवित्र वस्तु कों वा इनके खाने पीने वाले

मनुष्यों को कैसें जाने दे इनके जाने से मन्दिर शुद्ध कैसे रहै और मन्दिर बनाने के ग्रन्थन मैं लिखा है कि मन्दिर की जितनी पृथ्वी लम्बी चोड़ी है वा बीच की सर्व ज़मीन है इसमें कई ठिकाने नीचे हाड़ चाम रोम भस्म आदि अशुचि वस्तु रह जाय और कदापि ऊपर मन्दिर बनजाय तो अमङ्गल का सूचक है फल की प्राप्ति नहीं होय और मन्दिर की पृथ्वी जितनी लम्बी चौड़ी होय उसे बीच मैं से तथा चारों तरफ सें एक अङ्गुल कहीं भी पृथ्वी खाली न रहने पावे ऐसी खोदै जहाँ तक पत्थर मजबूत निकले और जहाँ पत्थर नहीं होय और मट्टी ही निकले तो जल निकल आवे वहाँ तक खोदै फिर नींव को बड़े पत्थर तथा चूने से भर के शास्त्रोक्त मन्दिर बनावे तो फल दायक शुभ का करने वाला होय है और जयपुर अजमेर लस्कर दिल्ली तथा पंजाब मैं मुलतान वा सिन्धु देश मैं देरा गाजीखान मैं सहारनपुर पाणीपथ सुनपथ कानाल आदि नगरों मैं शुद्ध दिगम्बर आम्नाय के मन्दिर हैं तिन मैं तबला मृदङ्ग सारङ्गी ढोलकी आदि बाजे रेशम के तथा कपडे के हैं सो जैसें चमड़े के बाजे बजते हैं वैसेही बजते हैं यह बाजे जयपुर मैं विधी चन्द्र दीवान श्रावक के मन्दिर मैं तैयार मिलते हैं जिन

जैनी भाइयों को धर्मसैं अनुराग होय तो रुपैया भेज मँगाय लेयँ जो विवेकी चतुर धर्मज्ञ हैं सो ऐसे काम करते हैं १ सतरंज चौपड़ गञ्जफा जूवा आदि कोई खेल खेलै नहीं वा देनेलेने की होड़ बोलै नहीं इनमें से कोई एक काम करैगा तो महा पापी होगा ॥२॥ कान नाक आँख नख दन्त इन आदि सर्वाङ्ग का मैल निकास के पटकै नहीं ॥३॥ स्त्रियों के हावभाव कटाक्षरूप लावण्यादि देख के काम विकार सैं खोटे परिणाम करैगा तो महा पापी होगा ॥४॥ रजस्वला स्त्री चार दिन पीछे प्रसूता स्त्री डेढ़ महीने पीछे मन्दिर में आवे जो आज्ञा के पहलै आवै तो महा पापकी भागिनी होयगी ॥ ५॥ कफ खङ्खार कुरला लाल वमन थूक इत्यादिक डारै नहीं दवा आदि से दन्त मञ्जन तथा मुख प्रक्षालन करै नहीं ॥६॥ केश नख चाम उखड़ावै नहीं क्षौर करावे नहीं ॥ ७॥ गूमड़ा फुनसी चिराय कै राध लोहू डालैं नहीं ॥८॥ ताम्बूल जरदा तमाखू हुक्का चरस अफीम भाँग गाँजा चण्डू आदि मन्दिर सम्बन्धी किसी मकान में खावे पीवे नहीं ले जावे नहीं ॥ ९ ॥ फुलारपुष्प अतर आदि सूँघै नहीं ॥१०॥ मूछ डाढ़ी मस्तक के केश कंगा से साफ न करै ॥११॥ पगड़ी आदि कपड़े अङ्ग ऊपर से उतार के धरै नहीं वा पाँव पर पाँव धर पाँव

पसार केवा भीत आदि का आसरा लेके देवे नहीं ॥१३॥ अङ्गुली हस्त पाद की चटकावे नहीं और हस्त पाँव दाबे दवावे नहीं तेल आदि वस्तु सें मालिस करावे नहीं ॥१३॥ अशुचि वा दुर्गन्ध वस्तु कौं देख नाक चढ़ा मुख को बाँका करे नहीं ॥१४॥ पंखा आदि सैं पवन करे करावे नहीं ॥१५॥ रुदन करते मन्दिर आवे नहीं मन्दिर तो शोक का दूर करने वाला है जो यहाँ आते शोक करेगा सो दुर्गति कौं जावैगा ॥१६॥ मन में खोटा सङ्कल्प कर आवै नहीं ॥१७॥ चक्की रख आटा दाल पिसावे नहीं ॥१८॥ ऊखली शिल्ल ऊखल रक्खे नहीं मसाला दाल नाज आदि कूटे नहीं ॥१९॥ पापड़ बड़ी नाज कपड़े आदि कोई वस्तु सुखावै नहीं ॥२०॥ बिना प्रयोजन इधर उधर फिरै नहीं ॥२१॥ आग से तपे तपावै नहीं ॥२२॥ वस्त्र सिलावे नहीं धोवे नहीं ॥२३॥ मंदिर के किसी मकान में खोटे गीत कला चतुराई सीखे सीखावे नहीं ॥२४॥ मल्ल युद्ध की क्रिया वा जल क्रिड़ा आदि मन्दिर के किसी मकान में करै नहीं ॥२५॥ राज कथा चोर कथा स्त्री कथा भोजन कथा आदि खोटी कथा न करे ॥२६॥ तिलक छापे करै नहीं पाग बाँधे नहीं शीशे में मुख देखै नहीं ॥२७॥ रिसवत देवै लेवे नहीं२८

प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुए पीछे टांकी से किसी अङ्ग कौं सुधारै नहीं ॥२९॥ साके अथवा बिना साके की बस्तु किसी को देने के वास्ते बटवारा करै नहीं ॥३०॥ खाट पिलङ्ग तखत आदि किसी मकान मैं बिछाय के वा दिवाल आदि का सहारा ले के सोवै नहीं वा बैठै नहीं ॥३१॥ पान सुपारी लौंग इलायची जायफल जावित्री आदि कोई बस्तु खाई होय तो जल से कुरला किये बिना मन्दिर आदि धर्म सम्बन्धी किसी स्थान मैं जावै नहीं ॥३२॥ मन्दिर के किसी मकान को गोबर सै लीपै नहीं वा कराडे गोबर ले जावै नहीं इसमैं असंख्यात त्रस बड़े छोटे जीव सन्मूर्छिन पञ्चेन्द्री पैदा होके मरते हैं सो माँस सदृश हैं साक्षात् विष्टा है छूने योग्य नहीं ॥३३॥ रे कारे तू कारे गाली कठोर कर्कश मर्म छेद मस्करी झूंठ कलह विसम्वाद ईर्षा आदि भंड बचन बोलै नहीं ॥३४॥ धर्म शास्त्र बिना और लौकिक शास्त्र लिखै नहीं मिथ्या शास्त्र पढ़ै पढ़ावै नहीं मिथ्या उपदेश देवै नहीं ॥३५॥ पावड़ी खड़ाऊँ लकड़ी वा पीतल की वा जूता आदि पहर के न जावै और मन्दिर मैं भी न रक्खै इनसे त्रस स्थावर जीवों की हिंसा बहुत होती है सो यह शस्त्र समान रखने योग्य नहीं को-

ई पहिरैगा तो चाण्डाल समान महापापी होगा ॥ ३६॥ भोजन की वस्तु औषधी चूर्ण जल दुग्ध आदि कोई वस्तु लेजाके खावे पीवे नहीं तथा आग जला के खाने पीने की औषध आदि कोई वस्तु तैयार करे नहीं वा इन में से कोई वस्तु रक्खे नहीं ॥३७॥ पुष्प माला पहर मस्तक ऊपर तुर्रा वा भाकू में कान में अतर फुलेल आदि सुगंधित वस्तु लगाके मन्दिर के किसी मकान में जावे नहीं और जावे तो पाप का भागी होवेगा जो इन के लाने में लगाने में धरने में कालखोया कषाय बढ़ाई सो वीतराग के मन्दिर में आयके च्यार घड़ी धर्म ध्यान करने से तो शुभ की प्राप्ती होती ॥ ३८ ॥ मन्दिर का द्रव्य उधार व्याज देके लेवे नहीं अथवा असबाब आदि कोई वस्तु दाम देके भी लेवै नहीं लेने से परिणाम मलिन होते हैं निर्माल्य द्रव्य का दोष आता है तीव्र पाप का भागी होता है सो भूल के लेने का विचार मत करो ॥ ३९॥ गाय भैंस घोड़ा ऊंट बैल हस्ती कबूतर सूवा मैना तीतर कोयल कुत्ता बन्दर नील हिरण इत्यादि तिर्यञ्च को मन्दर सम्बन्धी किसी मकान में रक्खे नहीं वा बांधे नहीं ॥ ४०॥ ग्रहस्थी के वा भट्टारकादिक के ताम झाम स्याना पालकी गाड़ी बग्घी इक्का ब-

वाहला तागा रथ आदि एक भी वस्तु मन्दिर सम्बन्धी किसी मकान में रक्खै नहीं ॥४१॥ मन्दिर के किसी स्थान में सुनार को रख के गहना गढ़ावे नहीं वा उज्जल साफ करावे नहीं किसी के दन्त ढीले जर होयँ तो तार आदि से बँधवावे नहीं ॥४२॥ ज्योतिष वैद्यक यन्त्र मन्त्र तन्त्र विद्या पढ़े पढ़ावे नहीं झाड़ा झपटा टोना टामन गण्डाडेरा आदि करै नहीं ॥४३॥ संसार सम्बन्धी सगाई ब्याह करने की अथवा इन सम्बन्धी देने लेने की वार्त्ता वा मित्र से मिलना इनसे कोई सलाह करना वा शत्रु के वैर सम्बन्धी झगड़े आदि की वार्त्ता करै नहीं ४४ ॥ मन्दिर में राज्यादिक के भय से छिपे नहीं अथवा कोई असबाव इत्यादिक छिपा के रक्खै नहीं जो राजको मालूम होवे तो मन्दिर को महान् उपद्रव करै तातें लगाय देवै सिपाहियों के पाहेरे बैठ जावै सारा असबाब लूट लेवे प्रतिमा का विघ्न करै सो पाप भागी होवे ऐसा काम भूल के करै नहीं ॥४५॥ मन्दिर में इस मूजब जल खर्च करै छना जल दोय घड़ी तक और प्राशुक किया दोय पहर तक चावल सीजे ऐसा उष्ण जल अष्ट प्रहर तक खरच करै जो मर्यादा उलङ्घ खरच करै तो उनमें असंख्याते जीवनि की हिंसा हो

य है सो इस कारि तीव्र पाप होवैगा इस वास्ते विधि पूर्वक करना योग्य है॥४६॥ मन्दिर का द्रव्य किसी के सुपुरद होवै अथवा किसी के जुम्मे कोई काम कराना सुपुरद होवै और उसमें देने लेने का काम होता है सो अपना भला मनाने के वास्ते मान बड़ाई के खातर किसी को जादा कम देवै लेवै नहीं जो काम करै सो विचार पूर्वक दोष रहित करै॥४७॥ आप मन में ऐसा विचार किया होय के ए बस्तु ये द्रव्य देव शास्त्र धर्म के अर्थ है फिर सङ्कल्प किये पीछे मन्दिर में देवै नहीं अपने घर ही में रक्खै सो द्रव्य निर्माल्य है अंश मात्र भी घर में रहै तो निर्माल्य खाने वाले की गति सो इनकी गति होवैगी जिसको नरक निगोद जानेका भय होय तो अपने घर में एक पैसा भी रक्खै नहीं॥४८॥ माता पिता भाई बहिन कुटुम्बी जन मित्र व्यवहारी लौकिक जन समधी आदि कोई की शुश्रूषा नमस्कारादि सन्मान करै नहीं॥४९॥ मन्दिर सम्बन्धी मकानों में जो काम करावै सो इतनी जातिके पास न करावै मुसल्मान धीमर अर्थात् कहार कोली चमार खटीक कलाल कषाई आदि नीच जाती जो मांस दारू खाने पीने वाले और मसक पखाल चाम के स्पर्श जल

से वा बिना छने जल से काम करावै नहीं ईंट की चूना की भट्टी लगावे नहीं मोल लेकै काम करावे बहुत दिन का भीजा मसाला न लगवावे शास्त्र में जैसें मन्दिर बनाने की क्रिया लिखी है उस प्रकार विवेक पूर्वक करावे तो फल की प्राप्ति होवैगी अज्ञान से अज्ञान का फल मिलैगा ॥५०॥ स्त्रियाँ मन्दिर मैं आयके सबै के घर की वा अपने २ घर की खाने पीने की देने लैने की वा गमी सादी की वा झगड़े की लड़का लड़की पैदा होने न होने की पेट दूखने की दाई आदि बुलाने की इत्यादि विपरीत मिथ्या वार्त्ता करै हैं कु० क्रिया के मार्ग मैं अगवानी होके कुमार्ग चलाने वाली कलहविसम्वाद करने मैं निपुण अभक्ष्य खाने मैं सिङ्घनी चुडैल राक्षसनी समान अनेक बकवाद कलकलाट चिड़ी समान पुकारने वाली न पूजा सुनने देवैं न शास्त्र सुनने पावै न चर्चा वार्त्ता करने देवै और सासू जिठानी नँनद समधन आदि की पगा लागनी मन्दिर में करै हैं सो यह धर्म कार्य में दुष्ट नीच चञ्चल बुद्धि शत्रु समान हैं तीन लोक में जो कपट है उसकी खोटमारी अर्थात् माता समान निर्भापणा की है मुक्ति के मार्ग कूँ रोकने वाली नरक निगोद की लेजाने के मार्ग प्रगट करने वाली है इन से बड़ा विघ्न करने वाला तीन लोक में कोई नहीं है

सो संसार से बाहिर न निकसने देवै संसार ही में भ्रमण करावै इनका चरित्र लिखने को तीन लोक की पृथ्वी बराबर कागज बनावै तीन लोक के समुद्र तथा नदी के जल की स्याही बनावै और तीन लोक में जितनी बनस्पती है उसकी कलमें बनावो और तीन लोक का बिधाता जो ब्रह्मा विस्नु महेश वा सारदा वा इन्द्र आदि ये सर्व मिलके आयु पर्यन्त जो स्त्री का चरित्र लिखै तो पार न पावै सो धर्म के आयतन में इन खोटी क्रिया कों छोड़ के अपनां कल्याण करना चाहिए ॥ ५१॥ मन्दिर आवै सो किसी असवारी ऊपर बैठ के तथा शस्त्र बाँध के आवै नहीं यहाँ प्रश्न किसी का मकान मील दो मील होय तो के सें करै उत्तर जिसकी शक्ति चलने की होय तो पैदल आवै किसी की शक्ति बिल कुल न चलने की होय सो असवारी ऊपर बैठ आवै और कितनेक पुण्याधिकारी पुरुष वास्ते हैं सो सम्मेदसिखर की यात्रा राजग्रही गिरनार शत्रुञ्जय पावा गढ़ माङ्गी तुङ्गी आदि की यात्रा अति कठिन है सो भक्तिमान् जीव पाँव से करते हैं ॥ ५२॥ लड़का लड़की पाँच बर्ष का होय उसे मन्दिर लावै छोटे को लाना योग्य नहीं ज्ञान बिना अज्ञानी उपद्रव करै मन्दिर की बस्तु कों हस्त लगावै बिगाड़ करै मल मूत्र करै

माता पिता को दो घड़ी धर्म सेवन करनै दे रोने लगजाय आकुलता होने से पाप का भागी होवे पुण्य का नाश होवै नाग कुमार जी की कथा में लिखा है नाग कुमार जी की माता पाँच बर्ष के को मन्दिर ले गई सो मन्दिर के बाहिर दूर धाय के पास बेठाय मन्दिर में दर्शन करने को गई फिर नागकुमार जी थोड़ी दूर खेलते गये वहाँ कुआ में गिरे फिर इन को देव सहाई हुए ऐसे पुण्याधिकारी की माता ने मन्दिर के बाहिर रक्खा परन्तु अबार कलिकाल के मोही मनुष्य हैं सो छोटे बालक को बस्त्राभूषण पहिराय अपना लोक मैं भला दिखाने के अर्थ मन्दिर में ले जाते हैं फिर परस्पर आपस में स्त्री पुरुष बात करें कि ये फलाने का बेटा है फलाने का पोता है फलाने की बेटी का बेटा है ऐसी बातों सुन के मन में बहुत सी खुसी होके तूँबा सरीखे फूल जाते हैं फिर लड़का लड़की मलमूत्र करे तो महा पाप का भागी होवे फिर पञ्चायत में बात बिगड़े धिक्कार होवे दण्ड देवे ऐसे महा पाप को जान के बालक को भूल के भी न लावै पाँच बर्ष का हुए पीछे लावे ॥५३॥ रात्रि को पूजा न करै रात्रि में त्रस थावर असंख्यात जीवों का विनाश होता है श्रावकों के धर्म में लिखा है कि रात्रि

को कोई बस्तु खावे नहीं वा जल की एक बूँद भी मुख में न ले रात्रि को बनाई खाने पीने की वस्तु सो दिन में खावे तो मांस लोही समान है हिंसा होती है गृहस्थ को कुछ भी आरम्भ न करना सामायिक प्रति क्रमण आदि धर्म ध्यान करना चाहिए ऐसा उपदेश श्री वीतराग सर्वज्ञ देवाधिदेव अरहंत ने कहा है फिर ऐसे उपदेश दाता अर्हन्त देव के वास्ते रात्रि को पूजा करना बहुत से दीपक जोना उचित नहीं इस कलिकाल में भेषधारी कुलिङ्गी सम्वत् १३१६ फीरोजशाह बादशाह के समय में हुए हैं उन्होंने बादशाह की सहायता से अपना मत नवीन पुष्ट करने के अर्थ बहुधा कपोल कल्पित शास्त्र पूजा पाठ कथादि चारों अनुयोग के प्राकृत संस्कृत गाथा दोहा घत्ता काव्य छन्द श्लोकादि रूप नवीन रच के आचार्यों के नाम लिख दिये और प्राचीन आचार्य कृत ग्रन्थों में भी अनेक प्रकार की बातें विपरीत लिख दई जे से कितनेक वैष्णव मत वालों में भी प्रमाणीक सत्पुरुष हुए उन्होंने ग्रंथों में लिखा है कि रात्रि को पूजन भोजन आदि क्रिया करने में बड़ा पाप है और मदिरा माँस सहत कस्तूरी कुप्पे का घृत तेल कन्द मूल बैंगन व दरी फलादि अनेक खोटी बस्तु हैं उन के खाने पीने का त्याग लिखा है और जल छान

के पीना लिखा है और कितने कवैस्नव मत में विषयी कषाय लम्पटी हटग्राही हुए उन्होंने लिखा कि सर्व कामराशि को करना योग्य है जितनी वस्तु हैं सो सर्व खाने पीने के वास्ते है अपने २ मतलब वालों ने न्यारे २ ग्रन्थ बना लिये ॥५४॥ देव अरहन्त जिन वाणी जो शास्त्र तथा गुरु निर्ग्रन्थ इन को देख के जो खड़े नहीं होते हैं सो महा पापी अविनयी हैं ऐसे लक्षण कलिकाल के कुलिंगी भेष धारियों में हैं भगवान के मन्दिर में सिंहासन गद्दी तकिया आदि लगा के बैठते हैं यहां इनके चेले पृथ्वी ऊपर बैठते हैं सो शास्त्र के पत्र हस्त में ले के पठन पाठन करते हैं और सारे दिन में बहुत वार शास्त्र लाने ले जाने का जो काम पड़े तो सिंहासन आदि ऊपर बैठा ही रहै सो पठन का हेका करते हैं अपने साथ निगोद ले जाना सिखाते हैं ऐसे पापी दुराचारी अविनयी की दूर से सूरत देखने योग्य नहीं ॥५५॥ मन्दिर के किसी मकान में कांच के झाड़ फानूस आदि जिस के देखने से भाव बिगड़ें सो वस्तु मत लगावो शास्त्र में कहीं भी आज्ञा नहीं ये तो वीतराग का मन्दिर है यहां तो जितने वीतरागता के भाव बढ़े वैसा ही काम करो ऐसा उपदेश देवै जिस से कर्म्म की निर्ज्जरा होवै जैन कुल पाया है शास्त्र का बांच-

ना सीखो स्वाध्याय करो सामायिक प्रति क्रमण जाप्य ध्यान पञ्च अणुव्रत आदि श्रा-
वकके बारह व्रत धारण करो श्रद्धावान दृढ़ श्रावक होय विषय भोग का त्यागी
निर्लोभी होय अन्न वस्त्र सिवाय और किसी वस्तु की वाञ्छा नहीं होय ऐसे के मुख
से शास्त्र श्रवण करने से सुनने वाले का श्रद्धान आचरण निर्मल होय है ऐसे काम
करने से वीतराग भाव होते हैं खाने पीने से इच्छा घटै और मन्द कषाय से शुभ गति हो-
ती है और झाड़ फानूस हाँडी लम्प तसवीर आदि अनेक प्रकार हिंसा की वस्तु भाव बि-
गाड़े हैं ये तो गृहस्थ अपने ब्याह सादी वा लड़का होने में वा दीप मालिका में लगा-
ते हैं और अन्य मती अपने मन्दिरों में लगाते हैं और दीपक आदि प्रज्वालित बहुत सा
उजाला करते हैं इन में वेश्या आदि के अनेक प्रकार नाच तमाशे होते हैं इन में
रागी विषयकषायी लम्पटी पुरुष वा स्त्री देख के अपने मन में बहुत सा आनन्द
मानि तूँबा सा रखे फूलते हैं और कहते हैं कि ऐसी वस्तु ऐसा तमाशा हमने कभी
न देखा अपने जन्म को कृतकृत्य मानते हैं इन मन्दिरों में जो दीपक जो ये इन में
असंख्याते चतुरेन्द्रिय आदि जीवों की हिंसा की सो ऐसे काम जिस गृहस्थ ने क-

राये वो महा पापी हुआ और इन की अनुमोदना करने वाले मिथ्या दृष्टी भी नरक नि-
गोदही में जावैंगे या प्रकार जैन में भी विषय कषायी लम्पटी हठग्राही मानी हैं
सो वीतराग के मन्दिर में ऐसे ही हिंसा के काम करावै हैं मन्दिर तो वीतरागता के
उत्पन्न का कारण ही है परन्तु जितने पुरुष वा स्त्री अपने कल्याण के इच्छुक जिन
मन्दिर में आये थे सो यह विपरीत हिंसा के कारण महा पाप देख कै इन सर्व का
इसरूप चिंतवन परिणाम हुये सो सारे ही पापी हुये उलटा नरक निगोद जाने के
भागी हुये सो ऐसे हिंसा के काम मन्दिर के किसी मकान में मत करो ॥५६॥ सादे
कांच कलई के मन्दिर में लगाते हैं जो पुरुष वा स्त्री दर्शन को आते हैं उस में मुख
देखते हैं अपने गहने कपड़े को भी देखते हैं सूरत टेढी है कि सूधी है ऐसे देख-
ते हैं यहां अपने कल्याण के निमित्त वीतराग भाव से आये थे सो उल्टा सरा-
ग भावों से परिणाम को विगाड़ै कर्म बंध हुआ सो ऐसे कले के कांच तो
विषयी कषाय लम्पटी जीवों के मकान में चारों तरफ लगाना चाहिये जिध
र की ओर मकान में फिरै उधर ही अपने शरीर को समाल कर देखा करै ऐसे कांच

वीतराग के मन्दिर में लगाने से क्या लाभ है कैसे कर्म की निर्ज्जरा होवैगी ऐसै उत्तम उपकरण अष्ट मङ्गल द्रव्य अष्ट प्रातिहार्य तथा इन्द्र और कई तरह की नारकियों के चित्र मन्यारे२ भयङ्कर डरावनी सूरत के बनावे कि फलाना पाप किया उसका यह फल है देखते ही पापसे भय भीत हो धर्म के सन्मुख होवै और बड़े२ ऐसे अक्षर रंगों के लिखावे जिन के बाचते ही संसार सै उदास हो कषाय की मन्दता और धर्म के सन्मुख होवै जिसमें वैराग्य बढ़ने के कारण मिलें वैसी ही बस्तु लगावो ॥५७॥

मन्दिर की बिछायत जाजम दरी चाँदनी गद्दे परदे चंदवे डेरे कनात साइबान इनमें लगाने के बाँस रस्से मेखें और निसान उड़ाने अबदागिरि चँवर छत्र छड़ी सोटा बल्लम पालकी और पील सोत्त लालटैन आदि अनेक प्रकार की वस्तु हैं उन्हें संसार सम्बन्धी सगाई व्याह में पुत्र के होने में मरण के कार्य आदि में जिस को जिस वस्तु की चाह होय सो पापी खुशामद करके लेजाते हैं जिस के जुम्मे मन्दिर की समहाल है वो अपनी मान बड़ाई के खातर मुलाकात वालों को देता है अथवा कोई हाकिम मुसद्दी से मुलाकात के खातर वा नामवरी कै वास्ते वा जिनसे

८० में पहुँचाते हैं और अँगरेज बड़े कसूर वाले कों काले पाणी भेजते हैं सो यह मन्दिर की

जो उपकरण आदि देने वाला तो तीन लोक के स्वामी का कसूरवार भया यह महा पापी न-रकों की तेंतीस सागर स्थिति भुगत के निगोद जायगा वहाँ असंख्याते काल पर्यन्त न-हीं निकल सके ऐसा जानि पाप से भय युक्त होके मन्दिर की एक भी वस्तु किसी को भूल के मत द्यो ॥४८॥ मन्दिर में स्नान पूजन के निमित्त करे बिना प्रयोजन नें करे और वैस्नव मत वाले भी पुरुष वा स्त्री अपने २ गृह में स्नान कर के सर्व अपने मन्दिरों में जाते हैं और कितनेक देश के जैनी मूर्ख घर से स्नान कर के नहीं जाते घर से निकस रस्ते में पाखाने जाते हैं उसी कपड़े से उसी लोटे को ले मन्दिर आते हैं बिना छने जल से पाँव हस्त धोके ऐसे ही जादा जल से स्नान करते हैं बिना छने जल से ही धोती धोयके मन्दिर के मकान में सुखाते हैं और कितनेएक देश में महा पापी अपनी ए-जपहिरने की धोवती भगवान के निकट सुखाते हैं यह सारा काम बिना छने जल से मन्दिर के नोकरों से रोजीना कराते हैं फिर कितनेक मनुष्य मन्दिर में जाके माला भी नहीं फेरते शास्त्र भी नहीं सुनते हैं केवल लोक लाज के वास्ते दूर से भगवानकी

सूरत देखते ही चले जाते हैं और कितनेक देश में यह रीत है मन्दिर में कंघा से बालों को सफा करते हैं मन्दिर में बहुत सा चन्दन केसर घिस के ललाट कौं वा सर्व शरीर कौं काँच में देख२ के मुफत का लगाते हैं घर में तो ऐसी सामग्री कभी मिलती ही नहीं सो अपने मतलब के वास्ते मन्दिर आते हैं भगवान के भण्डार के द्रव्य सें नोकर मन्दिर के काम के वास्ते रक्खे हैं सो पापी अपने घर आदि का काम कराते हैं निर्माल्य खाने वाले की गति सो इन की गति होगी ऐसे महा पाप को जान के अपना घर का काम एक भी भूल के मत करावो ॥५९॥ मन्दिर सम्बन्धी मकान में वृक्ष फूल आदि के न लगावै क्योंकि इन के नीचे एक अंगुल पृथ्वी में असंख्याते जीव सूक्ष्म वा स्थूल त्रश राशि एक घड़ी में पैदा होके मरते हैं फिर बारम्बार पैदा होते हैं इन के नीचे सदैव ही सील रहती है सो दिन रात आठ प्रहर की हिंसा के हिसाब की संख्या न हो सक्ती और थावर काय के जीवों की हिंसा के हिसाब को पारावार नहीं है ये तो पृथ्वी की बात हुई अब दरखत में डाले में पत्ते फूल में से सुई के अग्र भाग इतना लेवै तौ इन में भी अनंतानंत जीव निगोद राशि हैं और इस वृक्ष के निमित्त से असंख्याते त्रश नित्य नये

पैदा होके रोजीना मरते हैं एक दरखत का हिसाब करने को कौन समर्थ है तो सारे बाग में घास आदि न्यारे न्यारे बड़े छोटे लाखों वृक्ष हैं इसके एक दिन के पाप का हिसाब जो तीन लोक के समस्त जीव मिल करें तो नहीं हो सक्ता यह बाग कितने क वर्षों तक रहेगा इसके पाप का हिसाब केवली भगवान् केवल ज्ञान में कर सकते हैं जो विषय कषायी लम्पटी जीव महा पापी अपने वास्ते जो बाग लगाते हैं और कुएं खुदाते हैं पानी सिंचाते हैं सो नरक निगोद ही में अवश्य जायेंगे निगोद में एक स्वास में अठारह बार जन्म मरण करेंगे ऐसे असंख्याते परावर्त्तन काल तक दुःख भुगतेंगे जे जीव दुःख से भयभीत हुये उन्होंने ये विचार किया कि जैन कुल पाय के संसार में पाप बहुत किया व्यापार में बेटा बेटी के पैदा होने में ब्याह सादी में मकान बनाने में झूठ बोलने में असंख्याते जीवों की हिंसा की सो दुर्गति जाना होगा तहां असंख्याते काल दुःख भुगतेंगे अब विषय कषाय से परिणाम हटै ऐसा विवेक पूर्वक काम करना योग्य है और जो कि हिंसा करी है उसका पाप दूर हो वै अहिंसा धर्म्म की प्राप्ति होऐसा श्री सर्वज्ञ वीतराग देवाधि देव का मन्दिर शास्त्रोक्त हिंसा रहित बनावै

जिससे हमारे परिणाम की परणति निर्मल होवे और इस मंदिर के निमित्त से लाखों मनुष्य धर्मसेवन कर के नरक निगोद से परान्मुख होवे और वीतराग परणति से सम्यक्त की प्राप्ति होके थोड़े भव में मुक्ति पहुँच जन्म मरण से रहित होवे जो ज्ञानवान् थे सो ऐसा ही विचार पूर्वक बनाते थे और जे अज्ञानी विषय कषायी जीव हैं सो अभिमानी मान बड़ाई के वास्ते संगही वा सवाई संगही वा बड़े सङ्घही वा सेठ बनने के अर्थ चार छह मंदिरों की प्रतिष्ठा त्रस जीवों का घात करी कराते हैं तिसमें जोनार के वास्ते कई महीनों से आटा पिसाते हैं रात्रि दिवस आरंभ करते हैं उसमें पानी छानने की भी क्रिया कुछ नहीं बन सकै ऐसे ही दो तीन महीनों से पकवान बनाने का संचय करते हैं बहुत से आरंभ करने से महान् हिंसा हुई सो विचार करना चाहिये कि सर्वज्ञ वीतराग की तो यह आज्ञा है कि १ सावद्यलेशो बहु पुण्यराशी अर्थात् पाप का तो लेश होय और पुण्य की राशी प्रचुर होय सो तो क्रिया नहीं अपनी मान बड़ाई के वास्ते विपरीत क्रिया करी ऐसी जो नार करने में क्या धर्म भया धर्म तो यत्नाचार करने से होता है सो लाखों मनुष्यन की रसोई में यत्न होना बहुत कठिन है

इसमें तो असंख्याते त्रस जीवों का घात ही होगा इस वास्ते इन क्रियानि में पुण्य
का लेश भी नहीं संभव है इस वास्ते ज्यौंनार आदि हिंसा के कार्य नहीं करै फिर वीत
राग के निकट क्षेत्रपाल की न्यारी स्थापना करके रंजीना पूजा करते हैं यह ऐसा पा
प का बीज बोया कि नरकानिगोद में असंख्याते परावर्त्तन काल तक संसार ही में दुःख
भुगतैंगे फिर जो इनके वंश के जो हैं सो भी ऐसे ही दुःख भुगतैंगे क्योंकि जो हमारे
पुरुषा बड़े करते आये सो ही हमको करना योग्य है सो इन्होंने भी निर्णय न किया
जैसे एक भेड़ कुए में पड़ै तैसे उसके साथ की और भी पड़ै तैसें इन्होंने भी संसा
र पारि भ्रमण को नीमजारी की इस वास्ते ऐसा पाप को छोड़के विवेक सहित कार्य
करैगा उसी के कर्म की निर्ज्जरा होगी ॥६०॥ मंदिर सम्बन्धी मकानों में बैठके रुपये
महोर गहना जवाहरात वा कपड़ा बरतन आदि की परीक्षा न करै न बेचे न किराये
देवै कोई मुलाकाती को रक्खे नहीं और कोई असबाब नाज आदि रक्खे नहीं
यह तो मकान मन्दिर के असबाब रखने के वास्ते बनाये हैं सो अपनी कोई वस्तु भू
ल के मत रक्खो जो हठ ग्राही रक्खैगा सो दुर्गति ही को जावेगा ॥ ६१ ॥ मंदिर संबंधी

स्थान में मल मूत्र क्षेपै नहीं इन दिनों में पढ़े वा बिना पढ़े जैनियों ने मन्दिर के मकानों में पाखाने बना लिये हैं सो ऐसे पापी मिथ्या दृष्टी अनन्त काल तक नरक निगोद ही में रह के दुःख भुगतैंगे ऐसे जीवों के शरीर में भगन्दर जलोदर कुष्टरोग आदि होवेंगे शास्वती दुर्गन्धता रहैगी ऐसा जान मन्दिर से बहुत दूर जा के मल मूत्र क्षेपै ॥ ६२॥ देव शास्त्र गुरु के आगे चढ़ा द्रव्य अथवा भण्डार का द्रव्य में से एक पैसा भी संसार कार्य में लगावैगा अथवा कोई खावैगा तो शास्त्र में लिखा है कि अनन्त काल संसार के दुःख भुगतैगा और निर्माल्य द्रव्य खाने वाले को मन्दिर में जाने न दे मंदिर की किसी वस्तु को छूने न दे इन का कुवा जल भी किसी काम में न ले चाण्डाल तो एक भव का है ये तो भव भव में चाण्डाल समान है कितनेक लोभी इनही के पास सास काम मंदिर का करवाते हैं ये काम करने वाले दुर्गति ही को जायँगे ॥ ६३॥ मंदिर के वास्ते कुआ न खुदावे क्योंकि बड़े मंदिरों में जहाँ ज्यादा प्रतिमा हैं वहाँ प्रक्षाल पूजन के वास्ते आधे घड़े का काम है और आधे घड़े में दोय मनुष्य न्हावें धोवे है सो एक घड़े जल से समस्त कार्य हो गया तो कुआ

खुदाने से बहुत आरंभ क्यों करना जो संसारी मनुष्य प्रातःकाल मैं पाखाने जाकेघर के जल से स्नान करकेउज्जल शुद्ध वस्त्र पहिर सामग्री पूजन की लेके मन्दिर आते हैं फिर एक अँगोछा पतला सा वा हस्त का चौड़ा लम्बा पाञ्च हस्त का शुद्ध ले के पहिरै फिर एक सेर जल लेवे छोटा गिलास लेके धीरे २ स्नान करैतो सर्वाङ्ग शुभी ज जाता है जो प्रमाद रहित जीव हैं उनका सर्व कार्य सिद्ध होता है ~ जो विषयी कषायी लम्पटी प्रमादी जीव का कार्य बहुत से जल से सिद्ध नहीं होता है जैन मत मैं ये भी कहीं नहीं लिखा है कि बहुत से गरीब दुःखी मनुष्य हैं उनके पास एकभी बरतन नहीं है और कितनेक तिर्यञ्च पशु ऐसे हैं उनका कोउ स्वामी नहीं इन सर्वही के वास्ते न्यारे मकान मैं जल की पो लगावो तो मंदिर के वास्ते कुआखुदाने की तो दूर बात है और जैनी गृहस्थ के वास्ते ऐसा भी कहीं न लिखा है के अपने वास्ते कुआ खुदावो तो मंदिर के तथा हरएक मनुष्य वा पशु के काम आवेगा परंतु ऐसा लिखा है कि मंदिर बनाने वाला तो ऊँची गति को जाता है और कुआ खुदाने वाला अधो गति ही गमन करता है ऐसे काम कराने का बहुत सा उपदेश

अन्य मत में ही लिखा है कुएं के निमित्त से रात दिवस हिंसा ही की प्रवृत्ति हुई सो इस का पाप का हिसाब केवल भगवान ही जानै है विवेकी चतुर पुरुष कुआ खुदाने का वा बनाने का उपदेश भूलके न देवे ॥ ६४ ॥ कोई प्राय अधिकारी ने ममत्व छोड़के धर्मशाला बनाई उसमें हरएक मनुष्य धर्म सेवन जो स्वाध्याय विद्याध्ययन जा प्यध्यान आदि करेंगे सो इन्होंने तो इस भाव से संकल्प कर धर्मशाला बनाई सो बनाने वाले के पीछे कितनेक मनुष्यों ने अपने घर बना लिये अपने स्त्री पुत्रादि ल्याय रक्खे अपना असबाब धर दिया कितनेक ने खुलाकातियों को रक्खा नाज भर दिया किरायेदार रख दिये ये तो धर्म सेवन करने का स्थान था इसमें जो हिंसा सहित विषय कषाय के विपरीत लम्पटता के काम करके पाप बन्ध के कारण तीव्र हुये सो वज्रलेप हुआ इस वास्ते कोई संसारी जीव धर्म के स्थान में अपने संसार का काम एक भी न करै और धर्मशाला कराने वाला अपना नाम पत्थर में लिखा देवै कि ये धर्म सेवने का स्थान है ॥ ६५ ॥ पूजन प्रक्षाल करने वाला इतनी बात की मरयादि करै उसे कहते हैं ॥ प्रथम तो मिथ्यात्व

अन्याय अभक्ष का त्याग करै ॥ देव का स्वरूप सामान्य कहिते हैं ॥ देव अर्हन्त अठारा दोष रहित छियालीस गुण संयुक्त वीतराग सर्वज्ञ होय ॥ गुरु निर्ग्रंथ अ- ठाईस मूल गुण के धारी चौरासी लक्ष उत्तर गुण के पालन हारै दश लाक्षिण गुण के धारक बाईस परीसह के सहने वाले ॥ धर्म दया मयी सर्वथा प्रकार हिंसा कारके रहित होय त्रस जीव की वा पाञ्च स्थावर की रक्षा करै सोही अहिंसा धर्म है इन सिवाय जो धर्म है सो सर्वथा प्रकार मिथ्या है जो इन गुणों कारके रहित सो- ही मिथ्या देव मिथ्या गुरु मिथ्या धर्म है उनको पूजना बन्दना नमस्कारादि कर- ना वा उनके त्यौहार कों मानना वा इन त्यौहार के निमित्त वा मिथ्या देवता के निमित्त बनाई रसोई पक्वानादिक उसमें खुसी मानना वा उस भोजन कों खावै वा इनके मन्त्र यन्त्र वा झाडादि वा ना गंडा डोरा बाँधना ये सर्व मिथ्या हैं॥ पञ्च अनुव्रत के नाम हिंसा १ झूँठ १ चोरी १ पराई स्त्री इनका त्याग करै १ दश ग- कारके परीग्रह की मरयादि करै ॥१॥ सप्तव्यसन के नाम जूँवा १ मांस २ मदिरा ३ वेश्या ४ शिकार ५ चोरी ६ परस्त्री ७ इन सातों का त्याग करै॥

बाईस अभक्ष्य के नाम ॥ बैंगन १ द्विदल २ बहुबीज का फल गिर रहित जे सा अफीम के फल समान खाने सहित होय ३ ओला ४ रात्री का किया वा रात्रीका बासी भोजन न करे ५ अचार ६ कन्दमूल ७ मांस ८ सहत ९ मदिरा १० मट्टी ११ माखन १२ जहर जो अफीम सोमल वत्सनाग आदि जिसकें खायेसें मरे सो वस्तु न खावे १३ पीपल का फल १४ बड़का फल १५ उदंबर फल १६ कठूं-बर फल जो काठ कों फोड़ के लगे कठल पनास अंजीर गूलर आदि १७ पाकर फल १८ अजान फल जो कोई उस फल कों किसी देश में न जाने १९ तुच्छ फल जो साधारण छोटा फल होय २० तुसार जो ठंड के दिनों में पीछिली रात्री कों आकाश में सें जल की बूंदे गिर के सिला पर दरखतों के पत्ते पर पड़ के मिश्री समान जमते हैं २१ चलित रस जो जिसका स्वाद बिगड़े सो वस्तु न खावे २२ इन बाईस अभक्ष खाने का त्याग करै॥ ॥ कुप्पे के बासन में का घृत तेल जल चाम के स्पर्श का १ गोलोचन १ हींग १ कस्तूरी १ भांग १ गांजा १ जादा तमाखू १ हुक्का १ बाजार का आटा १ कंडे की बनाई रसोई १

बाजार का दूध दही १ हलवाई के दुकान की सर्व वस्तु १ अंगरेजों की वा मु-
सल्मानों की वा अत्तारों की दवा १ भाड़ का भुँजा नाज १ ॥ इन वस्तुओं का त्याग करे
पूजन करने वाला मनुष्य ऐसा न होय काना अंधा फूली आँख में डेरा बध
र कान नाक कटा न होय अंग भंग लंगड़ा कुबड़ा तोतला स्वर भंग घट उँगली
अधिक उँगली गूँगा खासी मेद गाँठ फोड़ा कोढ़ कसदाग बाबासीर अडीव भ-
गंदर रोगी स्वेत दाग बाँवना ॥

॥ जब तक ऊपर लिखे मूजब शास्त्र के अनुसार त्याग नहीं होगा तब तक पूजन
प्रक्षाल करने का फल कदापी न होगा इसका दृष्टान्त जैसे हस्ती वा गधा गं-
गा नदी में जाय उज्जल स्नान कर शुद्ध होय बाहिर निकस हस्ती तो सूँड में धूल लेय
सर्व शरीर ऊपर डाले है तैसें ही गधा भी स्नान कर शुद्ध होय बाहिर निकस खराब
स्थान में लोटता है वा विष्टादि खोटी वस्तु भक्षन करने लगे तो हस्ती का वा गधा का
गंगा में स्नान करने का क्या फल हुआ तैसें ही पूजन करने वाले मिथ्यात्व अन्याय अ-
भक्ष सेवन करेगा वा हिंसादिक खोटे व्योपार वा अन्याय का धन उपार्जन करेगा जो

कोई शास्त्र की आज्ञा भंग करके मान बड़ाई वा लोक रिझावने कों तथा लोभ के वास्ते करै तो वाके फल की प्राप्ती कदापी न होगी ॥ ६६ ॥ प्रथम पूजन कर्त्ता ग्रहस्थ श्रावक सूर्योदय से पूर्व शयन से उठके रात्रि की पहिरी हुई धोवती अलग धर दे फिर पञ्च हस्त का लम्बा सवा हस्त का चौड़ा अँगोछा पहर स्नान के स्थान में जीवां को अच्छे प्रकार दृष्टी लगाय देख सोध के मार्जन करै स्नान करने की चौकी तथा पट्टा अस्थापन कर उष्ण जल वा तत्काल का छाना शुद्ध एक सेर पक्का प्रमाण जल ले एक गिलास से शनै २ स्नान करै सर्व अङ्गों को निर्मल करै और शुद्ध शुष्क अँगोछे से सिर से पाद पर्यन्त शरीर को पोंछ के उज्वल धोती धोयी को धारण कर कुशासन पर पद्मासन कर स्थित होय सामायिक और प्रति क्रमण आदि नित्य नियम की क्रिया सम्पूर्ण करै पश्चात् जिन देव की पूजन निमित्त शुद्ध वस्त्रों को धारण करि पूजन की शुद्ध सामग्री ले मंदिर को गमन करै मार्ग में अन्य पुरुषों के स्पर्श से बचता हुवा और जीव जन्तु वा मल मूत्रादिक कों देखता हुआ प्रेम से भगवान के पूजन का उत्साह धरता हुआ मंदिर आवै उस समय किसी से बनज व्योपार वा कलहादि संवाद की बात और नमस्कार

आदि न करै और मंदिर के द्वार के बगल में चौकी के ऊपर गरम जल का पूर्ण कलश आ-
दि पात्र ढका धरा है उस में से गिलास से जल ले हस्त चरण धोवे तदनन्तर आगे चौकी
पर जो शुद्ध जल ढका धरा है उससे हस्त धोय श्री सर्वज्ञ देव जी के प्रेम सहित दर्शन करै
फिर वस्त्रों को उतार अलग अन्य स्थान में धर दे ॥ **अब मंदिर में मार्जन किस
क्रिया से और कितने स्थान में करै उसे कहते हैं** ॥ स्नान करने का अंगोछा म
हीन पञ्च हस्त का लम्बा और सवा हस्त का चौड़ा शुद्ध धोया पहन के चौकी ऊपर
स्थापित उष्ण जल से हस्त को धोवे तदनन्तर श्री सर्वज्ञ देव के मंदिर में से पूजन
चौकी वा पट्टे उठाय स्थानान्तर में धरै जीव जन्तु को देख कोमल मार्जनी से
मार्जन कर पूर्व पात्र के जल से हस्त धोय प्रथम पूजन की चौकी को पश्चात् पू-
जन के समय चरणों के नीचे के पट्टे को धरै कारण कि इस पट्टे को हस्त लगाय फिर
पूजन की चौकी को स्पर्श करै तो पाप का भागी होवे मंदिर की सर्व वस्तु अति
उत्तम है इस कारण बिना हस्त धोये स्पर्श न करै और जो कुछ कार्य करै सो विचा-
र पूर्वक धैर्य और आचार से करै प्रक्षाल करने के पात्र रखने के तथा पूजन की सामग्री

धोने के स्थानों में से चौकी और पट्टे उठाय अलग रख उन स्थानों को अच्छे प्रकार मार्जन करै हस्त धोय के प्रथम चौकी को फिर बैठने के पट्टे को धौवै फिर जल गरम करने के स्थान मैं जाय अङ्गार दानी की भस्म निकाल जीव जन्तु को देखि अलग भाजन मैं भर ढकके धरै सर्व पात्र इसी मैं माजै और हस्त दोनों धोय अङ्गार दानी को शुद्ध कर अलग स्थापन कर मार्जन करै स्नान के स्थान मैं से प्रथम चौकी पीछे स्नान के पट्टे को उठाय अलग धर मार्जनी से शुद्ध करै पश्चात् हस्त धोय चौकी पट्टे को धर दे फिर हस्त धोयले ॥ इति मार्जन विधि ॥

अथ स्नान करने की क्रिया कहते हैं ॥

स्नान के अर्थ गरम जल चौकी पर ढका अलग धरा है उस में से दूसरे पात्र में एक सेर जल ले शेष जल को ढकदे और जल लाने वाले प्रक्षाल करने वाले पूजन की सामग्री धोने वाले पूजन करने वाले के पहरने ओढ़ने के धोती दुपट्टे अंगोछे आदि वस्त्रों को इसी जल से धोय शुद्ध कर अन्य स्थान में अलग २ सुखावे कोई इनका स्पर्श न करै और मंदिर के किसी स्थान मैं शिर के डाढ़ी के मूँछ के केशों को कभी सैं साफ न करै इस कारण के शिर आदि के केश टूटने के पीछे अस्थि के समान अपवित्र होते हैं वो

जो अङ्गों से पृथक् हो के गिरैं गे तो पाप का बन्ध होगा और दर्पण में मुख न देखे कारण यह शृंगार का अंश है मंदिर में देखने सैं भगवान् के पूजन तथा भजन में चित्त को विक्षेप कौं उत्पन्न करता है सो ही कर्म बन्ध है इसके अनन्तर एक सेर जल पात्र में लेकै स्नान करने के स्थान में डेढ़ हस्त की ऊँची चोकी ऊपर स्थापन करै एक बड़ी परात स्नान के पटे पर धरै उस के मध्य एक विलस्त मान की ऊँची चौकी धरै उस पर बैठ छोटे गिलास से धीरज से स्नान करै छोटे पात्र का ग्रहण इस कारण कथन कीया कि जिस से जल बहुत वृथा खरच न होवे जल जितनी दूर तक वहेगा उतनी पृथ्वी के जीवों का विनाश होगा जिस से हिंसा रूपी पाप लगेगा और स्नान करते हुए जल के छींटे न उछलने पावे और जल के पात्र पर न पड़ने पावैं मस्तक से लगा के पाद पर्यन्त सर्व अंग में एक ठिकाने कहीं भी शुष्क न रहने पावे पीछे शुद्ध धोये अंगोछे से शिर से पाद पर्यन्त सर्व शरीर को पोंछे को ऊ अंग गीला न रहे इस प्रकार सम्पूर्ण शरीर पोंछ के फिर जल रखने के स्थान में जो किवा शुद्ध का चौकी के ऊपर जल पात्र में धरा है उससे दोनों हस्त धोय जल जाय वहां से शुद्ध सूखा अंगोछा पहर धोवती दुपट्टे पूजन के जल लाने

केअर्थ है उनमें से शुद्ध एक धोती बहुमोल की महीन लेके अंगोछे के ऊपर पहरे और एक दुपट्टा लेके मस्तक ऊपर दो आंटे लगा के खेंच के ओढ़े बीच में किसी समय न खुलने पावे सर्व शरीर ढक जाय दोनों कर और नेत्र वा मुख के सिवाय और कोई अंग उघड़ा न रहे फिर उष्णोदक से हस्त धोय किसी पदार्थ में हस्त का स्पर्श न करे और कदाचित् किसी वस्तु के प्रमाद से स्पर्श हो जाय तो फिर उस जल से हस्त धोवे और जिस परात में स्नान किया है उसके जल को राज मार्ग में अथवा वीथिका में कोई चतुर पुरुष अच्छे प्रकार जीव जन्तु रहित प्राशुक ऐसा स्थान में फेक देवै॥ इति स्नान क्रिया विधिः संपूर्णम्॥ **आगे जल लाने की विधि कहते हैं**॥ जल लाने के पात्र रांड़ पर थैले में मजे धरे हैं उनको उतार चौकी ऊपर धरे इस में से एक कलश एक गिलास इस प्रकार का वैसा छोटा लेवै जो कलश में समाय जाय छन्ना एक दुहरा पात्र के मुख से त्रिगुणा गाढ़े का और कलश सर्व ढकने के अर्थ एक सुपेद अंगोछा और एक लोटा ऐसा कि जिसके मुख ऊपर पीतल की भँवर कली लगी होय और उसके ऊपर एक कड़ी लगी होय और नीचे कुन्डा लगा होय इसी में पीतल की साँकल एक हस्त

लम्बी मजबूत लटकती है और तिपाई दो डोर एक जल निकालने की १ पात्र गोल थाल के सदृश चौड़े मुखका एक बिलस्त प्रमाण ऊंचा इन सर्व वस्तुओं को लेके जीव जन्तु देख शोध जल के अर्थ कूप पर जाय मार्ग में नीचे दृष्टी लगाय जीवों को बचाता हुवा और मल मूत्र चर्म हाड़ आदि अशुचि वस्तु और पुरुषों के स्पर्श से बचाता हुआ चले पु-रुष स्त्री आदि को मिष्ट वचन से समझाय कूवे पर से सर्व को अलग करदे फिर दोनों तिपायों को कूप के समीप उच्च स्थान पर धरे उन पर कलश आदि धरे लो-टे को कूवे में छोड़े जब जल भर जाय तब डोर को हस्त में समेटता खींचे डोर कन्धे ऊपर रक्खे जिससे भूमि में न गिरने पावे और कदापि जितनी डोर भूमि में गिरै उतनी को छने जल से धोवे और लोटे को कूप में से निकाल थाल सदृश चौड़े पात्र में धरे जैसे बिना छने जल की बिन्दु भूमि पर एक भी न गिरने पावे छन्ने को दुहरा कर कलश के मुख ऊपर रख उस में जल छाने फिर छने जल से कलश तथा गिलास को तीन बार साफ धोवे दूसरी तिपाई को जल से धोके उस पर छन्ना धरे फिर छन्ने को कलश के मुख ऊपर झोली के सदृश लम्बा करके रखले पतली डोर से बांधै जि-

ससे छन्ना। कलश के मुख से अलग न होय छन्ने के सरकने से जल बिना छना जाय इ
सकारण डोर से बान्धै जल छानने के समय किसी वस्तु की तरफ देखै नहीं चित्त की वृ-
त्ति को एकाग्र कर के जल को धीरजता सैं छानै जिस से एक भी बूंद कलश के बाहिर न गि-
रै और जल छन्ने से एक अंगली नीचा रहै कलश के किनारे पर न आवे किनारे पर आवे
तो उबल के नीचे बिना छनी बूंद गिरैगी जब कलश भर चुकै पीछे सारी डोर को कन्धे
ऊपर रक्खे फिर छन्ने की झोली के छने जल से अपने हस्त को बड़े पात्र में धोवै फिर
कलश के जल को गिलास में ले के छन्ने को बड़े पात्र मैं धो निचोड़ तिपाई के ऊपर र-
क्खे छन्ने के धोवने के जल को भंवर कली के लोटे में कर के छने जल से बड़े पात्र को
दो बार धो के लोटे मैं जल को घाल दे इस लोटे के नीचे की तली मैं कूंडा पक्की अल
का लगा है उसी कुन्डे मैं सांकल एक हस्त लम्बी पीतल की लगी है उसी मैं दो कड़ी
गोल लगी हैं सो सांकल के नीचे की बाजू कड़ी मैं लम्बी डोर जल निकासने
की बंधी है सांकल के चतुर्थ भाग मै दूसरी कड़ी लगी है उसी मैं दो आंकड़े पीतल के ल
गे हैं सो छोटे आंकड़े को ले कै भंवर कली के ऊपर की कड़ी मैं लटकाय दे फिर लो

टेको कूपमें छोड़े जब वो लोटा जल से एक हस्त ऊंचा रह जाय तब डोर को हलाय झड
कादेवै तत्काल आंकड़ा कड़ी में से अलग होकर लोटा औंधा होता है उसमें का जल सर्व
कूपमें गिरता है फिर लोटे को खींच छने जल को लोटे में डाल पूर्ववत् कूपमें छोड़ डोर
को हलाय झटका देवै ऐसें लोटे को छने जल सें तीन वार बिलछन करै कलश को सर्व त-
रफ से वस्त्र करि ढके कन्धे ऊपर कलश को धरि दूसरे हस्त में दोनों तिपाई बड़ा पात्र डो-
र लोटा ले पूर्ववत् यत्नाचार से मंदिर आवे मंदिर के द्वार में आवकजन होय वह
चरण धुवाय दे जल धरने के स्थान में चौकी पर तिपाई धर कलश धरै दूसरा शु-
द्ध सूखा छन्ना ढक दे जिस से कलश में कोई जीव आदि न गिरै जल शुद्ध रहै और जल
वा कलश को सर्व ढक के जल लाये थे इन दोनों वस्त्रों को निचोड़ झड़काय के बिल
गनी पर सुखावै और जल भरने की डोर को खूंटी पर और लोटे को औंधा करि चौड़
पर धरे और जल लाने की धोती दुपटे को बिलगनी पर धरै ॥ इति जल लाने की
विधिः समाप्तः ॥ **आगे प्रक्षाल करने की क्रिया को कहते हैं ॥** प्रक्षाल कर-
नेवाले के धोती दुपटे अंगोछा शुद्ध धोये बहु मोल के धरे हैं उनमें से प्रथम अंगोछा

पहिरे फिर अँगोछा के ऊपर धोती पहिरै फिर दुपट्टा के दो आँटें शिर पर लगा ओढ़े दोनों हस्तों को जल धरने के स्थान मैं धोय प्रक्षाल करने के पात्र लाड़ू ऊपर थैले में मंजे बँधे धरे हैं उन्हों को उतार चौकी पर धरे प्रक्षाल के अर्थ इतने पात्र अवश्य होने चाहिये एक बड़ा लोटा थाल दो अवखोरे तीन और इन के ढकने के पात्र इन सर्व पात्रों को चौकी पर धरे इन पात्रों में सूक्ष्म जीव जन्तु को देख शुद्ध जल से धो के दूसरी धोई चौकी पर धरे। शुद्ध कूप से लाया जल से बड़े लोटे में ले ढक के धोई चौकी पर धरे फिर उसी कलस में जल सामग्री धोने कों तथा पूजन करने के और पुरुष स्त्री दर्शन करने को हस्त मे भेट लेके आते हैं उनके धोने के अर्थ शुद्ध धोये तीन पात्रों में भर के धर दे और हरडै तथा आँवला लौंग शुद्ध प्रासुक धो शिल पर पीस के इन कषायले द्रव्य कों इन तीनों पात्रों के जल मैं छोड़े इस प्रासुक जल की दो पहर की मर्याद है इन तीनों पात्रों को ढक के सामग्री धोने के स्थान मैं अलग २ चौकी पर धर दे और जो रहा कलश मैं जल उस को गरम करने के पात्र मैं भी अङ्गार दानी पर ढक के रख दे और लकड़ी बिना बीधी सूखी फाड़ी हुई छोटे टूक की ये लेवै और कोयले मिलैं तो बिलकुल लकड़ी से गरम जल न करे

और इतनी वस्तु से गरम जल न करै गोबर के कराडे घास कड़वी भूसा इन में असंख्याते जीव बड़े वा सूक्ष्म पैदा होकै मरते हैं और गोबर के कराडे में इतना पाप है कि प्रथमतो पञ्चेन्द्रिय गौ बैल भैंस घोड़ा हस्ती ऊँट गधा बकरा कुत्ता बन्दर आदि तिर्यञ्च जीवें कीविष्टा वा मूत्र मनुष्यानि के मलमूत्र समान है ये अशुद्ध अपवित्र छूने योग्य नहीं इस वास्ते न तो इन से लीपै न जलाने के वास्ते रसोई आदि के कार्य में लेवै जो सर्वोत्तम भगवत् का मंदिर में अशुचि अपवित्र येकैसे लावे और प्रक्षाल करने के जल में सुगन्धि वा कषायली वा लौंग आदि कोई वस्तु न छोड़े कारण यह है कि सुगन्धित जल से स्नान करावने से भगवान् की मूर्ति पर पिपीलका आदि सूक्ष्म जीव चढ़ जाते हैं अथवा भगवान् के प्रति बिंब पर जल में डाली द्रव्य का लेप हो जायगा इसी वास्ते शास्त्रों में केवल शुद्ध जल ही से प्रक्षाल करना लिखा है बगल में पलोटी में कान के पास प्रतिमा के नीचे इन सुगन्ध वा कषायले द्रव्य की वास से जीव आते हैं ॥ **अब प्रक्षाल करने की बिधी कहते हैं** ॥ और प्रक्षाल करने के समय में कोहनी पर्यन्त दोनों हस्त को धोय के फिर उन शुद्ध हस्त को पृथ्वी आदि किसी वस्तु को न छुवे और लाल

आदि खुजावै नहीं कदाचित् भूल से लग जाय तो उस हस्त को धोय ले फिर श्री सर्वज्ञ देव के सिंहासन चौकी को मार्जन करने के अँगोछे शुद्ध धोये सूखे अलग रक्खे हैं उन में से ग्रहण करि मार्जन करै फिर इन अँगोछे को अलग खूँटी पर रक्खै और प्रक्षाल करने के पात्रों सहित चौकी को उठाय के श्री सर्वज्ञ वीतराग देवाधिदेव जहाँ विराजमान हैं उस ही स्थान में एक बाजू रख दे और पूर्व जो बड़े लोटा में शुद्ध जल भरा है उस से तीनों आबखोरे भर ले एक आबखोरे को हस्त धोने के लिये चौकी पर धर दे जब धोती दुपट्टा आदि किसी वस्तु को स्पर्श हो जाय तब इसी आबखोरे के जल से हस्त कौं धोय शुद्ध कर ले फिर दूसरे आबखोरा कौं दूसरी चौकी पर अलग धरै जब प्रक्षाल के पात्र में जल न रहै तब इसी आबखोरा का जल ग्रहण करै और तीसरा आबखोरा एक थाल प्रक्षाल के स्थान में रक्खै और प्रक्षाल के वस्त्र जो शुद्ध जल के धोए अलगनी ऊपर हैं उन्हों में से ले वे इस प्रकार सर्व सामग्री शुद्ध करके प्रक्षाल करै इसकी यह रीति है कि प्रक्षाल करने वाला मौन कौं धारण करै प्रथम एक महीन वस्त्र धोया सूखा ले के भगवान् के सर्व अङ्गों का मार्जन करै भगवान् की छोटी मूर्ति हो वै तो उनकूं मार्जन करि के थाल में

स्थापन करै भगवान् का प्रक्षाल मन वचन काय और विनय सेकरै और जो जैन धर्मी प्र-
क्षाल के समय आये हुए सर्व जन मिल के भगवान् के गुणानुवाद भक्ति पूर्वक अनेक
प्रकार से गाय के नाना प्रकार के वादित्र बजाय के प्रक्षाल का उत्सव करै और प्रक्षालक
रनेवाला पुरुष इतने जल से प्रक्षाल करै एक अङ्गलोना ले आवखोए के जल से भिजो
य भगवान् के सर्व शरीर कों चारो तरफ से पोंछ के अङ्गलोने को थाल मैं धर दे फिर सूखा
अङ्गलोना लेके भगवान् के सर्व शरीर बुगल का न पलोटी आदि कों शुध्य अच्छे प्रकार
से साफ पोंछे जिससे कहीं भगवान् के अङ्ग में जल का अंश न रहे इसी प्रकार जित
ने भगवान् के स्वरूप हैं उन सर्व को क्रम से स्नान करावे और जो कदाचित भगवान् के
प्रति बिम्ब अधिक होय और स्नान कराने में दोय घटिका से अधिक बिलम्ब लग जाय
तो चौकी ऊपर बड़े लोटे मैं जल रक्खा है उसमें से दूसरे पात्र में जल छान ले वे फिर
इस बड़े लोटे में छन्ने को छने जल से धोय अङ्गकाय चौड़ा कर बिलगनी पर सुखादे
और जो प्रति बिम्ब शेष रहे उन सर्व का प्रक्षाल करै इन सर्व प्रक्षाल के अङ्गलोना को
प्रक्षाल के थाल में धरै जो छना हुआ जल कलश में धरा है उसी से सर्व अङ्गलोनो

को धोयकर इकाय चौड़े कर बिलगनी पर सुखा दे ॥ इति प्रक्षाल विधिः समाप्तम् ॥

अथ गन्धोदक की विधि कहते हैं ॥ इस थाल में जो गन्धोदक है उसी में से एक कटोरी में प्रति दिन जितने की आवश्यकता होय उतना लेवै उसमे कषायला द्रव्य पीसा हुवा छोडै और छने जल की दो घटिका की मर्याद है और प्रासुक की ये जल की दोय पहर की इसका कारण यह है कि दर्शन करने वाले पुरुष स्त्री दोय पहर तक आते हैं इस वास्ते प्रासुख कीया है गन्धोदक की कटोरी को ढकके चौकी पर धर दे इसी के पास गरम जल का लोटा ढकके धर दे और इसी के निकट दूसरी चौकी पर एक गोल पात्र बिलस्त मात्र का ऊँचा सहस्त्रछिद्र का थाल से ढक के धरा है और जो पुरुष स्त्री दर्शन को आवै वो भगवान् के दर्शन करकै गन्धोदक कों प्रेम से मस्तक मैं धारण करै फिर पूर्व स्थापित गरम जल के पात्र से सहस्त्र छिद्र वाले मैं हस्त कों धोवे और प्रक्षाल करने के सर्व पात्रों को इकट्ठे करि एक चोकी पर धर के जहाँ से प्रथम लाया था उसी स्थान मैं धरै और जो गन्धोदक थाल मैं है उसे भूमि वा मकान के ऊपर की छत पर न डाले इस कारण मलमल का दुपट्टा नया महीन

शुद्ध जल का धोया सूखा लेवे जिसमें सर्व गन्धोदक भिजोने से खींच आवे अर्थात् भिजोने से थाल में का सर्व गन्धोदक कौं सोख ले जिसमें कपड़ा सूख जाता है वैसा वस्त्र लेवे अब इस गन्धोदक के कपड़े को दो डोर पर सुखा दे एक हस्त के अंतरसे बँधी है कारण की एक डोर से दोनों पल्ले मिलने से सूखने में देर होती है और महीन वस्त्र इस अर्थ है कि जल्दी सूख जाय बहुत देर तक आर्द्र रहने से सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होती है जिस कटोरी में गन्धोदक ढकारख्वा है और इसके पास हस्त धोने की चौकी पर पात्र धरा है सहस्र छिद्र के थाल से ढका सो जो दर्शन करने को पुरुष स्त्री आते हैं ते सर्व गन्धोदक कौं मस्तक लगाय सहस्र छिद्र के पात्र में हस्त धोये थे उसी जल को शुद्ध धोये दुपट्टे में भिजोय के विलंगनी पर सुखाय दे इसमें भी गन्धोदक का जल है और प्रक्षाल करने के धोती दुपट्टे को उतार के विलगनी पर धर दे और जो प्रक्षाल समय में बड़े लोटे का जल दूसरे पात्र में छाना था और उस छन्ने को बड़े लोटे में धोया था उस धोवन के जल को भँवर कली के लोटे में डाल दे फिर बड़े लोटे को छने जल

से दोय वार धोके उसी में छोड़ दे फिर एक अवखोरे में छना हुआ जल ले के और दुपट्टा और भंवर कली का लोटा ले कूप पर जाय लोटे को पूर्ववत् कूप में छोड़े फिर गिलास के जल से भँवर कली के लोटे को धोय फिर उस जल को पूर्ववत् कूप में छोड़ के मंदिर चला आवे वहाँ मंदिर के द्वार पर आव कहो यं सो चरण धुवाय दे डोर को खूँटी पर लोटा को टांड़ ऊपर धरे॥ इतिगन्धोदकविधिःसमाप्तः॥

अथ दर्शनकरने की विधि कहते हैं॥ प्रथम तो सर्वत्र पुरुष वा स्त्री लड़का तथा लड़की दर्शन के अर्थ मंदिर में आवे सो किस प्रकार से आवे सो कहते है पूर्ववत् विधिः से अपने२ गृह में स्नान करि धर्म सम्बन्धी नित्य क्रिया करि शुद्ध वस्त्र महीन बहु मोल के उज्जल धोये पहिर वा उत्तम अलङ्कार आदि भूषणों को अपनी शक्ति अनुसार पहिरि ललाट में केशर चन्दन का तिलक कर अष्ट द्रव्य में से जो शुद्ध प्रासुक सामग्री हो सो भेट को ले के गृह से मंदिर को प्रेम से भक्ति सहित गमन करै मार्ग में अन्य पुरुषों के स्पर्श से बचता हुआ और जीव जन्तु को देखता भी अर्हन्त देव के दर्शन का उत्साह करता हुआ मंदिर आवे और

प्रथम द्वार के एक बगल में चौकी पर ढका पात्र गरम जल का धरा है उसमें एक गिलास रक्खा है उससे हस्त पाँव को अच्छे प्रकार से सफा धोवे परन्तु जल बहुत कम खरच होवे ऐसे धीरे धीरे धोवे फिर आगे दूसरी पौली में हस्त धोने के अर्थी चौकी के ऊपर शुद्ध गरम जल का पात्र ढका धरा है और उसी के समीप हस्त धोने का गोल पात्र सहस्र छिद्र के थाल से ढका धरा है उसमें हस्त धोय आगे सामग्री धोने के स्थान में जाय के यहाँ प्राशुक किया जल दूसरी चौकी पर न्यारा ढक के धरा है और इसके समीप एक पात्र गोल चौकी पर सहस्र छिद्र का थाल से ढका है सो इस प्राशुक कीये जल से तीन बार भेंट की सामग्री सहस्र छिद्र के पात्र में साफ धोवे और यहाँ पाँच हस्त का लम्बा दुपट्टा खूँटी पर शुद्ध जल का धोया सूखा धरा है उसमें इस धोई सामग्री का जल निकाल सुखा लेवे फिर हस्त में ले श्री सर्वज्ञ वीतराग देव के सभा मण्डप में जाय वहाँ घण्टे बंधे हैं उनको बजाय के नस्सही ३ तीन बार बोल के जय शब्द तीन बार उच्चारण करके पाँव को चार अंगुल के अंतर से बराबर जोड़ के अञ्जुलि में द्रव्य लिये हुये श्री वीतराग सर्वज्ञ भगवान् के मुखारविंद के सन्मुख दृष्टि लगाय अनेक विविध प्रकार से गुणानु-

वाद गाय स्तुति करि हस्तगत द्रव्यानि मैं अष्ट द्रव्य का संकल्प करि अर्घ का श्लोक बोल भक्ति पूर्वक प्रेम से मन बचन काय से दोनों हस्त मैं सामग्री ले अर्घ उतार के श्री सर्वज्ञ वीतराग देवाधि देव सर्व दर्शी के आगे चौकी के ऊपर अर्पण करै फिर दोनों हस्त की अञ्जुली कों नारियल सदृश जोड़ के तीन आवर्त्तन और एक शिरोनुति करै दोनों गोड़े दो हस्त एक मस्तक पृथ्वी पर लगाय मन बचन काय से नमस्कार करि खड़ा होय इसी प्रकार अन्य तीन दिशाओं मैं तीन३ आवर्त्तन एक एक शिरो नुति करै इसी प्रकार तीन परिक्रमा करै छत्तीस आवर्त्तन अरु बारह शिरोनुति हुये और परिक्रमा करते स्तुति पाठ को पढ़ता जाय फिर भगवान् के सामने खड़ा हो स्तुति पाठ पढ़ के नमोकार मंत्र का नव जाप्य सत्ताईस उश्वास सहित करै फिर नमस्कार करके पूजन सुने शास्त्र का पठन आदि करै फिर सभा का शास्त्र भक्ति पूर्वक एकाग्र चित्त करके श्रवण करै और अपनी शक्ति के अनुकूल संयम धारण करै अर्थात् नित्य कुछ त्याग मर्याद करै अपनी शक्ति को कदापि न छिपावे और जो छिपावे तो कपट वा माया चारी का दोष आवैगा ॥ इति दर्शन की विधिः सम्पूर्ण ॥

अथ पूजन की सामग्री प्रकरणम्

चाँवल बदाम खोपरा पिस्ता सुपारी छुहारे द्राक्षा चिरौंजी अखरोट लौंग इलायची जायफल जावित्री कमलगट्टा चिलगोजा केशर और धूप के वास्ते मोटा लम्बा बहुत सुगन्धित चन्दन का डेढ़ हस्त का टूक कर लेवे उसी को दो हरे कपड़े में रखनिरं तर रेती से घिस ले इत्यादि सामग्री नवीन देखने में सुन्दर मनोज्ञ भीतर से और बाहिर से सड़ी गली तथा घुनी छिद्र युक्त न होय बहुत मूल्य की होय चाँवल बहुत सफाई से छुये किनकी कर के राहित अच्छे प्रकार से बीने हुये अखंड लेवें गेहूँ चना मूँग उर्द जुआर बाजरा मोठ मसूर तूअर मटर मक्का इत्यादि जिन में उगने की शक्ति होय सो पूजन तथा भेट करने योग्य नहीं और केवल चाँवल में उगने की शक्ति नहीं है

वास्ते येही पूजन योग्य लिखे क्योंकि मूलाचार आदि ग्रन्थों में लिखा है कि धान्य के एक बीज का भी स्पर्श मुनिराज के चरण से हो जावे तो उस दिन मुनिराज भोजन का त्याग करें तो ऐसे धान्य पूजन योग्य कैसे हो सक्ते हैं इस वास्ते प्राशुक होय सो चढाने योग्य है और सामग्री धोने वा पूजन करने के पात्र टाँड़ पर थैले में सँजे बाँधके धरे हैं उसे उतार चौकी पर धरे और सामग्री धोने वाले के अँगोछा धोती

पहिर दुपट्टा ओढ़ हस्त को शुद्ध जल से धोय पट्टे पर बैठे प्रथम प्रासुक स्वल्प जलसे
एक लोटे को अच्छे प्रकार तीनवार धोवे उसमें प्राशुक जललेके पूजन की चोकियों
को जीव जन्तु होय उसे देख सोध के धोवे फिर थैले में से पात्रों को निकाल चौकी पर
धरें थैले को टांड पर रख दे पात्रों में जीव जन्तु देख सोध धोके चोकी पर औंधे
धरें जिस से जल शीघ्र निकस जावे और पूर्वोक्त सामग्री में से बहुत थोड़ी लेवे कारण
कि थोड़ी का होम हो सक्ता है और यत्नाचार भी अधिक पल सक्ता है और चढ़ी सामग्री
नदी वा सरोवर कूप में वा पर्वत पर वा जंगल में डालना तथा पृथ्वी के भीतर दावना
वा तिर्यञ्च कों नहीं खिलावे वा किसी को देना नहीं लिखा है सो देने वाला और लेनेवा
ला नरक अवश्य ही जायँगे जितनी चाहिये उतनी धोवे फिर उसका जल को गोलपात्र
में जो पट्टे पर सहस्र छिद्र के थाल से ढका है उसमें डालता जाय सहस्र छिद्र के
पात्र से ढकने का यह मतलब है कि जिसमें मक्षिका आदि कोई जीव न जाने पावे
सर्व सामग्री को प्रासुक जल से तीन वार साफ अच्छे प्रकार धोय शुद्ध सूखे अँगोछे
में धर सर्व सामग्री में से जल निकासे केशर को धोय के पत्थर के ओर सापर महीन

घिसे और शुद्ध धोई सामग्री मैंसे चतुर्थ भाग चाँवल और गोला की गिरी मैं से अर्द्ध अर्द्ध भाग लेके न्यारे न्यारे केशर से सुन्दर होहने रङ्गे फिर पूजन के थाल मैं सर्व सामग्री कों प्रथकार अच्छे प्रकार से चुनके रक्खे सामिल न होने पावे सामग्री को बहुत से मनुष्य देखैं तब मन मैं हर्ष युक्त होय सामग्री बनाने वाले को धन्यवाद देवै कि भी सर्वज्ञ देव के पूजन के अर्थ ऐसी उत्तम सामग्री बनाई है इनका जन्म सफल हो हु और जो रधुपी सामग्री का जल पात्र मैं है उसे जो बुद्धिमान् चतुर पुरुष होय सो विवेक पूर्वक श्रावक शुद्ध शुष्क पृथ्वी मैं जीव जन्तु को शोध धीरज तासे च्यारों तरफ फैलाय के पटके ॥ इति सामग्री विधिः समाप्ता ॥ **और पूजन के अर्थ चौकी पंच इस प्रकार होवे उसे कहते हैं** ॥ प्रथम एक चौकी बड़ी तीन हस्त की लम्बी और डेढ़ हस्त की चौड़ी ऊँची एक गज़ तीन फ़ुट और उस बड़ी चौकी के ऊपर तीन हस्त चौकी पौन पौन हस्त की लम्बी इतनी चौड़ी और पौन विलस्ति की ऊँची होय और एक चौकी छोटी एक बिलस्त लम्बी चौड़ी और ।विलस्त की ऊँची इस प्रकार पाँचो होय इन चौकियों के ऊपर जीव जन्तु देख शुद्ध जल से धोय सु-

ढ वस्त्र से पोंछ साफ़ करै और पूजन करने के अंगोछे धोती और दुपट्टे बहु मूल्य के शुद्ध धोये पहिरै और डुपट्टा को मस्तक ऊपर दो आंटे लगाय के खैंच के गोठै कि पूजन करने के समय खुलने न पावे और दुपट्टे के दोनों पल्ले इधर उधर न होवे जिस से कम्मर के दोनों बगलों में दवावे हस्त को जल से धो लेवे फिर किसी वस्तु कों हस्त न लगावे कदाचित् लग जाय तो प्रासुक जल से धो ले और पूजन की सामग्री सर्व धोई है उसे पूजन करने के स्थान में ले जाय युक्ति के साथ क्रम से स्थापन करै सब से छोटी चौकी को बड़ी चौकी के मध्य में स्थापना का ठोना धरै कोने में एक रकेबी धरै उस में केशर चन्दन का साथिया बनावे फिर स्थापना की छोटी चौकी के सन्मुख एक चौकी स्थापन करै इस ऊपर थाल धरै फिर पूजन समय जो सामग्री अर्पण करै वो इस थाल ही में करै जल चन्दन जिस पात्र में अर्पण करै उस पात्र के ऊपर ढकना छिद्र सहित ढके इस चौकी के इधर उधर दोनों पार्श्व में दो चौकी स्थापन करै एक ऊपर पूजन करने की सामग्री स्थापन करै दूसरी पर जल चन्दन के गिलाश ढकने सें ढक के रक्खै और रकेबी वा हस्त पों-

ढकने के अँगोछे स्थापन करै शुद्ध धोया वस्त्र से ढके और धूपदान ढकने सहित होवै और ढकने में बहुत से छिद्र होवें धूप प्रति दिन रेती से घिसके तैयार करै बासी अर्पण न करै॥ इति चौकी॥ **अथ पूजन करने के न्यारे न्यारे पाठ के नाम कहते हैं** ॥ श्रीअर्हन्त बीतराग सर्वज्ञ देवाधि देव के सन्मुख दर्भासन अथवा काष्ट के पट्टे पर खड़ा होके दोनों पाँव बराबर करै बीच में चार अंगुल का अंतर रक्खे इधर उधर अंग को झुका के देखे नहीं और मण्डल की पूजन करै तो सामग्री थाल में चढ़ावै मण्डल के ऊपर न चढ़ावै बिनय सहित भक्ति पूर्वक मन बचन काय सें करै प्रथम पञ्च परमेष्ठी के पञ्च साथिये अनुक्रम सें बनावै 卐 卐 卐 卐 卐 इनहीं साथियों पर पूजन न्यारी२ करै प्रथम अर्हन्त की स्थापना करै फिर अष्ट द्रव्य न्यारे न्यारे बोल के चढ़ावै फिर अर्घ फिर पुष्पाञ्जली फिर जयमाल पढ़ि अर्घ चढ़ावै फिर आशीर्बाद पढ़ै इसही मूजब सिद्धों की स्थापना करै ऐसेही आचार्य उपाध्याय साधू और बीस बिरहमान अकृत्रिम चैत्यालय सरस्वती जी शास्त्र जी निर्वाण क्षेत्र सोलह कारण दशलक्षण

रत्नत्रय अष्टान्हिक आदि और पाठ पूजन करना होय सो करै फिर शाँति पाठ पढ़ि
कै बिसर्जन करि समाप्त करै और सर्व पूजन करै पीछे जो पूजन करते सामग्री थाल
मैं चढ़ाई उस थाल को ले जहाँ प्रथम पुरुष वा स्त्री दर्शन करने को आये तब उ-
न्होंने सामग्री जिस थाल मैं चढ़ाई थी उसी मैं पूजन की सामग्री को रक्खे
और पूजन के सर्व पात्रों को सामग्री के धोने के स्थान मैं चौकी पर धरै और पूजन
करने की धोती दुपट्टा को उतार बिलगनी पर रक्खै और रकेबी पूछने के तथा हस्त
पूछने के अँगोछे ले शुद्ध जल सै धोय फटकार चौड़े कर बिलगनी पर सामग्री
धोने के मकान मैं सुखावे अथ पञ्च परमेष्टी आदि की स्थापना की विधि कहते
हैं जो स्थापना करते हैं ऐसैं एक अर्हन्त की स्थापना तीन बार बोल तीन चाँवल
बिराजमान करते हैं ऐसैं ही अनुक्रम से पञ्च परमेष्टी आदि की स्थापना न्यारी २
करते हैं सो तीन तीन चाँवलों सैं एक एक की स्थापना करै जादा चाँवल न ले
फिर पूजन करै पीछे स्थापना के चाँवल ठोने मैं से ले कोयले की अग्नि प्रज्वालित
करकै उस मैं भस्म करै जैसैं तीर्थङ्कर केवली तथा वीस विरहमान वा सामान्य के

^ उसमैं एक २ की स्थापना तीन २ बार बोल के करते हैं इनमें एक २ बार स्थापना मैं एक २ चाँवल अखंड ठोना मैं विराज.

वली जब मोक्ष को जाते हैं तब उनका शरीर रहता है उस को अगर चन्दन आदि सुगन्ध वस्तुमैं देव रखते हैं फिर अग्नि कुमार देव उनके शरीर को नमस्कार करते हैं जब इनके मुकट के निमित्त से अग्नि प्रगट होकै इनका शरीर भस्म होता है तैसें इनमैं भी भगवान् की कल्पना करि स्थापना की आगै पूजन पाठ होता है सो विसर्जन किये पीछे ये स्थापना के चाँवल हैं सोही भगवान् का शरीर हुआ इस वास्ते जरूर भस्म करै इसमें किसी प्रकार सन्देह नहीं है॥ इति स्थापना के चाँवल का प्रकरणम्॥ **अथ मण्डल रचना की सामग्री कहते हैं**॥ कोई पुरुष मण्डल की पूजन शुद्ध आम्नाय से करणे की इच्छा करै तो उसे उचित है कि मण्डल रचने की सामग्री शुद्ध उत्तम संग्रह करै प्रथम एक चन्दन की चौकी ले और जो चन्दन की न मिलै तो काष्ट की सुन्दर मनोज्ञ ले उस पर पञ्च रङ्ग से मण्डल की रचना करै श्वेत कृष्ण रक्त पीत हरित प्रथम श्वेत रङ्ग चाँवलों को धोय के बनावै और कृष्ण रङ्ग कौं शुद्ध घृत वा तेल का दीपक प्रज्वालित करकै उससे कज्जल पाड़ के बनावै लाल रङ्ग हींगलू को घोट कै बनावै पीत रङ्ग केसर को घोटकै हरित रङ्ग हरताल और कज्जल कौं एकत्र घोट कै बनावै इनसे चाँवलों को रङ्ग पाँच प्र-

कार बनावै मण्डल रचने की यह विधि है मण्डल मॉड़नें वाला जैनी भाई पाद हस्त शुद्ध जल सें धोय कै मंदिर के शुद्ध धोती पहर कै मंडल मॉड़े परन्तु चोकी पर पट्टा धर के उसपर बैठ कै मंडल की रचना करै मंडल की चोकी पर पाँव न धरै प्रथम चोकी के ऊपर एक रक्त वस्त्र सुन्दर मजबूत बिछाय च्यारों कोणों को डोरी से खैंच के बाँधे कहीं सलोट न रहै फिर मण्डल रचना खूब चतुराई से विचित्र रचै जब इस प्रकार सहज में उत्तम शुद्ध सामग्री सम्पादन हो सक्ती है तो फिर विलायती रङ्ग खेसों का बनाया क्यों लावै श्रावक जनों को उचित है कि सामग्री सम्पादन में आलस्य न करै कारण कि धर्म कार्य के करणे में आलस्य और प्रमाद करै तो फिर वह धर्म कार्य कैसे सिद्ध होगा इससे धर्मकार्य में आलस्य प्रमाद नहीं करना चाहिये देखना चाहिये कि आपने स्वार्थ के वास्ते शोध का घृत दुग्ध दही बूरा वा उत्तम जल आदि दूर देशान्तरों सें मँगाते हैं जैसें एक रुपये की बस्तु को चार रुपये देकै बड़े परिश्रम कष्ट के साथ मँगाते हो और उत्तम पक्वान्न वा गहने कपड़े मकान आदि बनाने के खर्च दूर देशांतर सें चतुर पुरुषों को आपने यहाँ बुलाते हो और दूर देशान्तर सें अनोखो बहु मूल्य वस्तु होय उस के

वास्ते आदमियों को भेज के मँगायलेते हैं अपने विषय भोग साधन निमित्त कार्य करने मैं दोड़ २ के यत्न के साथ बनाने मैं किंचित भी आलस्य नहीं करते हो इनमैं तो फुरसत प्रमाद रहित बहुत सी मिलती है और परमार्थ परम कल्याण ऐसैं मण्डलकी रचना है सो जिनेन्द्र भगवान् की भाक्ति धर्म सम्बन्धी कार्य है इसमें आलस्य करते हैं ये मनुष्य जन्म मिलना महा दुर्लभ है फिर श्रावक का कुल पावना और जैन धर्म की प्राप्ति होना दुर्लभ सैभी महान् दुर्लभ है ऐसैं मण्डल की रचना के अर्थ यह आलस्य करते हैं कि बजार से विलायती आदि रङ्ग लाय के मण्डल की रचना करते हो येरङ्ग म्लेक्ष मनुष्यों ने त्रस जीवों की हिंसा करके अक्रिया सें तैयार किये हैं ये अपवित्र छूने योग्य नहीं है इसवास्ते शुद्ध उत्तमरङ्ग सें मण्डल की रचना करो॥ इतिमण्डलरचने की सामग्री॥ **अथ निर्माल्य का लक्षण कहते हैं**॥ जो किसी पुरुष नै द्रव्य उपार्जन कीया फिर उस द्रव्य मैं से कितनेक द्रव्य से ममत्व घटा सङ्कल्प किया कि इतना भण्डार मैं दिया इसको देव धन कहते हैं इतना धन द्रव्य जिनेन्द्र के पूजन मैं मन बचन काय से भाक्ति पूर्वक मंत्र सहित अर्पण किया इसकोनिर्माल्य क

हते हैं सो द्रव्य महा उत्तम पवित्र हुआ ये द्रव्य नमस्कार करने योग्य है वो द्रव्य यह
है जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल आदि द्रव्य अर्पण करने वाले की
मालकी बिलकुल न रही अब इस काल में कितनेक पुरुष वा स्त्री उत्तम बंश के उपजे
हैं सो क्या करते हैं जो ये भगवान् के आगे पूजन में सामग्री संकल्प कर चढ़ाई उसे
हस्त का स्पर्श हो जाय और हमारे घर में खाने पीने आदि की जो वस्तु है उसको हस्त
लग जाय तो हमारे निर्माल्य द्रव्य ग्रहण करने का दोष लगै इस कारण हस्त को उ-
त्तम जल से उत्तम स्थान में धोते हैं और जिस द्रव्य का त्याग करके पूजन में चढ़ाया
उस द्रव्य कों माली व्यास गूजर ब्राह्मण आदि कों देके फिर उस से मंदिर आदि की
नौकरी लेना शास्त्र में कहीं नहीं लिखा है जैसें कोई जिस स्त्री से पैदा हुआ वो माता भ-
ई फिर कोई कारण पाय के घर में .. खाने कों भी न रहा तब पुत्र ने माता को वेश्या ब-
नाय उसी के द्रव्य से नौकर रक्खे वा आजीविकादिक का काम चलावे सो ये पुत्र पुण्या-
धिकारी है के पापी है के ये अनन्त संसारी है सो निर्माल्य खाने खुवाने वाला अनन्त संसा-
री है भव भव में चाण्डाल समान है ये नरक निगोद के पात्र हैं इसका छुआ जल भी किसी

के छूने योग्य नहीं है इस वास्ते इन कों मंदिर के उपकरण छत्र चमर सिंहासन और पूजन के वा जल लाने के स्नान करने के हस्त पैर धोने के पात्र कों वा मंदिर के बिछौने दरी चाँदिनी गद्दे आदि और पूजन करने वाले के सामग्री धोने वाले के प्रक्षाल करने वाले के शास्त्र बाँचने वाले के धोती दुपट्टे पहिरने और ओढ़ने के वा चौकी पट्टे आदि कों निर्माल्य द्रव्य ग्रहण करने वाला स्पर्श न करै तथा मंदिर के किसी मकान में मार्जन न करै और इतने स्थानों में न जाय भगवान् के मन्दिर में वा सभा मण्डप में स्वाध्याय करने के शास्त्र रखने के सामग्री धोने के गरम जल करने के स्नान करने के स्थान में इन आदि मंदिर के किसी स्थान में न जावै निर्माल्य खाने वाला निर्माल्य द्रव्य कों बेच के धन संग्रह करने वाला वा इन से जो काम कराने वाले ये तीनों हीं बराबर नरक निगोद के जाने वाले हैं ॥ इति निर्माल्य का लक्षण समाप्तम् ॥

अथ अष्ट द्रव्य चढ़ाने में कितनेक मनुष्य आपस में झगड़ा करते हैं उनके समझाने को कहते हैं ॥ भगवान तो वीतराग सर्व दर्शी निर्लेप हैं सर्व वस्तु के त्यागी और अष्ट द्रव्य तो सर्व बराबर हैं इन में कमती जादा कोई भी नहीं है

परन्तु स्थापना के पूर्व में अर्हन्त की प्रतिमा के ऊपर केसर और पुष्प जो चढ़ाते हो इस-
का क्या प्रयोजन अष्ट द्रव्य कौं रकेबी में ले के जब अर्घ का श्लोक बोल के थाल में
चढ़ाते हैं तब उसही रकेबी में से केसर वा फूल कौं न्यारे निकाल के भगवान् के
अङ्ग ऊपर क्यों नहीं चढ़ाते हो अर्घ चढ़ाते समय तो सर्व द्रव्य समान ज्ञान के
सामिल अर्पण करते हो और स्थापना की ये पाहिली केसर पुष्प भगवान के अङ्ग
ऊपर क्यों चढ़ाते हो केसर फूल ये दो द्रव्य उत्कृष्ट भक्ष्य है इसलिये भगवान् के
अङ्ग ऊपर चढ़ाते हो और वह द्रव्य अभक्ष्य समझ कर भगवान् के अङ्ग ऊपर नहीं च
ढ़ाते हो जो ये अङ्ग ऊपर ही चढ़ाने योग्य वह द्रव्य नहीं है तो दो यही द्रव्य से
पूजन करना उचित है इनके अङ्ग ऊपर चढ़ाने से क्या फायदा है ये द्रव्य अर्प्पण
करना केवल अपने भाव लगाने के अर्थ है गृहस्थ के भावों की स्थिरता बनी रहे
तो द्रव्य का चढ़ाना मुख्य नहीं है और कर्प्पूर किस वस्तु का बनता है सो ठीक नहीं
है चीन विलायत आदि देश से जहाज वा अग्नि बोटों में आता है सो म्लेच्छ खोटी क्रि
या से बनाते हैं जलादि वस्तु इकठी करके बहुत दिन सड़ा के उसे औटा के बनाते

हैं और इसमें बहुत सी सपेदी किस वस्तु से होती है सो ठीक नहीं है और इस हिन्दुस्तान देश में हजारों वर्ष हुए आज तक दीपान्तरों से आता है बनाने की क्रिया कोई नहीं जानता है कहते हैं कि केले के दरख्त के रस का बनता है तो हिन्दुस्तान के चारों हाथे जो कलकत्ता मुम्बई मंदरास पञ्जाब आदि किसी देश में आज तक बनाने वाले होते तो सर्व दरखतों से केले के दरखत महँगे विकने लग जाते और सर्व देश में सर्व पृथ्वी ऊपर केले के दरखतों के बगीचे लग जाते और लगाने में म्हेन तअर खर्च बहुत थोड़ा लगता है और फायदा जादा होता है और कोई ऐसा ही हठ कर कहै कि शास्त्रों में लिखा है केले का बनता है तो प्रत्यक्ष को प्रमाण देने से क्या फायदा है केले का एक सेर रस निकाल के औटा के देखो जो उसमें वैसी सुगन्धता वैसी सुपेदाई वा वैसा ही इस रस का पिराड बनता होय तो परीक्षा करके जरूर देखो जैसे इक्षुरस का गुड़ खांड़ मिश्री बनती है वैसे इस के रस का बनता तो सर्व मनुष्य बनाय के धनवान होते इस केले के दरखत में बिलकुल सुगन्धता नहीं है जैसे चन्दन के वृक्ष में वैसी ही सुगन्धता वा चन्दन के तेल में जैसी

सुगन्धता वैसी केले के दरखत में नहीं है और त्रस जीवों का नाश होके जो वस्तु तैयार की सो पूजन में चढ़ाने योग्य नहीं है और हरे पुष्प वा फल में बहुत से त्रस जीवों की हिंसा होती है इस वास्ते जिसमें त्रस जीवों का घात होवे ऐसी कोई वस्तु मत चढ़ाओ और पुरुषार्थ सिद्धोपाय आदि ग्रन्थन में प्राशुक द्रव्य पूजन में चढ़ाना उत्तम लिखा है और जो कोई श्रावक द्रव्य का त्यागी होय और बिना द्रव्य भाव पूजा करै है उसके पुण्य का बन्ध होता है और स्वर्गादि उत्तम गति कों जाता है तो प्राशुक पूजन करने वालों कों फल की प्राप्ति क्यों नहीं होय होय ही होय गृहस्थ का सामग्री बिना मनस्थिरता नहीं होता है जिस वास्ते सामग्री चढ़ाते हैं कुछ सामग्री चढ़ाये मोक्ष नहीं होती है मिथ्यात्व अन्याय अभक्ष्य आदि का त्याग करि सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सहित पूजन करै तब स्वर्गादिक के सुख की प्राप्ति होवै मनुष्य जन्म उत्तम कुल पाय मुनि दीक्षा ग्रहण करि उत्कृष्ट सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्र इन तीनों की पूर्ण एकता होके मोक्ष की प्राप्ति होती है और जो मिथ्यात्व अन्याय अभक्ष्य का त्याग न करै केवल त्रस जीवों की हिंसा करके नाम मात्र ही

पूजन करैगा सो नरक अवश्य जायगा जैसें कोई गृहारम्भ का त्यागी नग्नै दिगम्बर मुनिराज है ओर हिंसा के कारण से नरक ही जायहे अब उत्तम प्राशुक सामग्री कहते हैं फूल के वास्ते चाँवल कौं चन्दन केसर मैं रङ्गे इन मैं रङ्ग भी ओर सुगन्धता वा सुन्दरता होती है ओर नैवेद्य किसमिस आदि मेवा का बना लेवै दीपक खोपरा की गिरी को केसर सौं रङ्गे ओर फल बदाम लोंग इलाइची पिस्ता जायफल आदि ये प्राशुक सामग्री लेकै चढ़ावै जैसें चाँवल को केसर से रङ्ग लेते हैं ओर पाषाण की वा पीतल की आदि धातु की प्रतिमा मैं साक्षात् पंच परमेष्ठी आदि का संकल्प करकै उसही की स्थापना करते हो ओर उसी को भगवान् ऐसे कहते हो वा कूवे के वा नदी के जल मैं क्षीर समुद्र वा गंगा नदी के जल का संकल्प करके चढ़ाते हो तो वैसै ही प्राशुक अष्ट द्रव्य बनाय के इनमैं वैसा ही संकल्प करके भाव स्थिति के अर्थ सामग्री चढ़ाना योग्य है ओर शास्त्र में लिखा है के जिस नाज मैं उगने की शक्ति है वो नहीं चढ़ाना सचित्त फल आदि चढ़ाना तो दूर ही रहो ये तो कलि काल के कुलिङ्गी भेष धारियों ने प्राचीन ग्रन्थों मैं लिख दिया है ये भेष धारी कई बर्षों के हैं ओर अब भी दक्षिण देश मैं पूना से लगाके सोलापुर फलटण हैदराबाद कोल्हापुर मदरास के

सर्व देशोंमें जैन बद्रीआदि के देशोंमें कलकत्ता मुम्बई हाता के जो कुलिङ्गी है सो इस बख-त चढ़ी सामग्री खाते हैं प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या देवै ॥ इति ॥ **अथ शूद्र के वा अन्यमती के लाये जलसें स्नान करने का निषेध लिखा है** ॥ पूर्व पूजन करने के प्रमाण में स्नानकरने का वा जल लाने का सम्बन्ध में लिखा है परन्तु विपरीत मार्गी विपर्यय काम करनेलगे उनके समझाने को कहते हैं अन्यमती शूद्र मन्दिर की चढ़ी सामग्री खाने वाले इनके न तो बरतन माजने का ज्ञान न पानी छानने का ज्ञान जैसें क्रिया लिखी है वैसी ये क्या जानें न तो इनके पाखाने के कपड़े रखने का ज्ञान न रात के सोने के कपड़े अशुद्ध का विचार बिलकुल विवेकरहित मंदिर में अर्प्पण की या चढ़ा सामान के ग्रहण करने वाले अपर शूद्र स्नान इनका आकिया का लाया छूया जल से स्नान भूलके भी न करे वा पूजन प्रक्षाल करने वाले के कपड़े न धोवै और कितने कनगर में ये विपरीतता है कि अन्यमती के हस्त से जल मँगायकै उससे भगवान् की प्रक्षाल वा पूजन भी करते हैं जो इन्के लाये जल से तुम सर्व जैनी स्नान करके शुद्ध होते हो तो इन्हीं के हस्त से पूजन प्रक्षाल क्यों नहीं कराते हो वा इनके हस्त का बनाया भोजन क्यों नहीं जीमते हो

इनमें क्या दोष है तुमको जो धर्म से अनुराग भक्ति नहीं है तो तुम्हारे कैसें कर्म की निर्जरा होवैगी कैसें उत्तम गति को जावोगे भक्ति रहित काम करते हो सो अधो गतिही को गमन करोगे॥ इति॥ **अथ चाँवल तथा खोपरा का अशुद्ध वा शुद्ध का निर्णय कोकहते हैं** ॥ चाँवलों में गरमी वा वर्षा के ऋतु में त्रस जीव बहुत से उत्पन्न होते हैं और उसमें जाले पड़ते हैं और कितनेक चाँवलों के भीतर जीवों की उत्पत्ति होती है उसका पेट ऊपर से सुपेद होता है परन्तु उसको अच्छे प्रकार उपयोग लगाय के कोई भी नहीं देखता है और दुकानदार हरएक स्थान में ढेर करते हैं अथवा कोठा में डाल देते हैं वा थैले में रखते हैं ये तो धर्म बुद्धी होते ही नहीं हैं विवेक रहित जीवों की दया पालते ही नहीं हैं केवल हिंसा ही के काम करते हैं और इनसे सिवाय श्रावक महापापी हैं विवेक रहित हिंसा ही के काम करते हैं जीवों की उत्पत्ति के चाँवल ले आते हैं फिर जो इनसे अधिक मूर्ख ज्ञान रहित पुरुष वा स्त्री होय उसे अच्छे करने को देते हैं उन्होंने अज्ञानता से चालनी से छानलिये सूप से फटक देख सोध तैयार किये परन्तु इनमें भी कितनेक जीव रह गये और जो जीव चालनी सूप से निकसे उनको रस्ते में पटक दिये सो उनको

कितनेक जात के तिर्यञ्चों ने भक्षण किये और कितनेक तिर्यञ्चों के वा मनुष्यों के पाँव नीचै दब कै मर गये वा बर्षा के दिनों में कीच मैं पट कै सारे ही जीव मर गये और कितनेक मूर्ख पुरुष वा स्त्रियों नै प्रथम बिन चुनके तैयार किये थे उन में कितनेक जीव रह गये थे फिर उन चाँवलों को ले सामग्री धोने वाले को दिये उस मूर्ख ने भी सँभाल के नही देखे वैसे ही जल मैं डाल रगड़ के धोने मैं जितने जीव थे सो सारे ही मार दिये और जो कोई चतुर पुरुष ने किसी दिन मूर्ख मनुष्यों के बीने चाँवलों को थाल मैं रख बिना स्थिरता जल्दी से बीन फटक के सामग्री धोली उस में भी कितनेक जीव रहे सो मर गये और जो सामग्री बीनी थी और उन में से जो कितनेक जीव निकाले थे सो सारे ही मंदिर मैं पटके सो आने जाने वाले श्रावकों के पाँव नीचै दब कै सर्व मर गये इन ने भी अविचार पूर्वक अदया ही का काम किया ये भी महा पापी रहे ॥ इति ॥

अब खोपरा की शुद्ध अशुद्धता दिखाते हैं ॥ गोले के वा छोटे टूकों की पिछाड़ी की लाल पीठ ऊपर लकीरें पड़ती हैं उसके भीतर सुपेद जीव छोटे बहुत से गरमी मैं वा बर्षात के दिनों मैं होते हैं जब मूर्ख मनुष्य वा विवेकी चतुर पुरुष छीलते हैं सो

सर्व जीवों का विनाश करते हैं सो महापापी रहे ये तो सदैव ही की बात हुई और जो क भी छोटा वा बड़ा मण्डल विधान का उत्सव होता है उनमें बहुत सी सामग्री इकट्ठी लाते हैं उसे कितनेक मूर्ख पुरुष वा स्त्रियों को शोधने को दिये उन्होंने भी विवेक रहित जैसें तैसें शोध के तैयार किये वैसे ही मूर्ख सामग्री धोने वाले ऐसे ही विवेकरहित पूजन के करने वाले मिले अविचार पूर्वक बिना देखे शोधे हिंसा ही का कार्य किया अब जो चाँवलों में वा खोपरा में किसी प्रकार हिंसा का दोष न लगे उसे कहते हैं धान्य जो शाली नवीन जिस देश में वा नगर में बहुत सी आती होय वहाँ सें बारह महीने की पूजन में वा मण्डल विधान में जितनी खरच में चाहिए उससे जादा लावै उसको चुनके सूपसें फटकके साफ करै फिर भस्म को चालनी से छानके धान्य जो शाली को ठस में मिलाय मिट्टी के नये भाजनों में भर के उनके मुख ऊपर जादा भस्मी रखके दाबै इनके रखने का स्थान सूखा होय वहाँ ढक कै रख दै जब चाहिये तब आठ दिन के पूजन लायक धान निकाल के उसे अच्छे प्रकार शुद्ध बीन चुन के कूट अच्छे साफ वे इस मूजब करना उत्कृष्ट है और किसी से ऐसी बिधि बिलकुल न बने तो दूसरा प्र

कार कहते हैं शीत ऋतु में जो ठंढ के दिनों में नये चाँवल जिस नगर में बहुत से आते होय वहाँ जा
के सुपेद लम्बे देखने में सुन्दर और जल सैं जल्दी न भीजे टूक न होने पावे ऐसे मजबूत लावे
चालनी से छान बाँस के सूप में ऐसे फटकै कि उस में चाँवल का टूक न रहने पावै इस में से क
ङ्कर ... मिट्टी निकाल के राख को चालनी से छान चाँवलों में मिला के हस्त से सर्व को एकत्र
कर मिट्टी के नये पात्रों में भर के मुख पर राख को जादा दावे फिर इन को सूखे स्थान में रक्खे ॥

अब खोपरा को शुद्ध लाना दिखाते हैं ॥ शीत काल में नया खोपरा आता है
सो एक गोला की दो कटोरी होवें भीतर से सुपेद ऊपर की पीठ लाल बिना लकीर की होवे
देखने में सुन्दर गोला लावे सो बारह महीने के पूजन में वा मण्डल विधान में चाहिये उतने
लावे इनको राख में वा भूरी बालू रेत में वा नदी के रेत में मिलाय के मिट्टी के नये पात्रों में भर
के और इन के मुख ऊपर भस्मी अथवा नदी के रेत जादा रख के दावे इनको सूखे स्थान में रख
दे और चाँवल में से वा खोपरा में से आठ दिन के पूजन लायक निकाल लेवे फिर राख को भाज
न के मुख ऊपर दाब दे इस प्रकार उत्तम चाँवल वा खोपरा की सामग्री हो सक्ती है तो भक्तिमा
न क्यों नहीं करते हो फिर हिंसा सहित अधर्म के कार्य क्यों करते हो जो जैनी पूजन के वास्ते

सामग्री अशुद्ध जीवों की हिंसा सहित खाते हैं॥ इति॥ **शास्त्र के पढ़े वा रखान पान शुद्ध करनेवाले और लायक गृहस्थ समझवार धनाढ्य इन तीनों की अज्ञानता न्यारी २ दिखाते हैं॥** इस कलिकाल में किञ्चित मात्र अंश मात्र पढ़े सो न तो सभा का शास्त्र बाँचे न समय पाय मंदिर में आवै कदापि किसी दिन धर्म का कोई कार्य पूछने का आय पड़े तो इनके बुलाने के वास्ते मंदिर के दामों का रक्खा नोकर दश पाँच वार उन को बुलाने को जावे जब ऐसे कहै के आता हूँ फिर दूसरे बखत बुलाने को जावै जब ऐसै कहै कि इस समय मुझे फुरसत नहीं है कदापि किसी दिन आवै तो पञ्चायती मैं इनकी बात को कोई माने नहीं क्योंकि इनहीं को धर्म से अनुराग नहीं और अपने संसार के बढ़ाने के अर्थ लोभ कषाय से अन्याय के गुप्त काम करते हैं जिनके मिथ्यात्व अन्याय अभक्ष्य का तो त्याग ही नहीं और किसी दिन कहीं भोले मनुष्य ने मेलाउत्सव कराया हो और उनमैं कदापि जाय पहुँचे और कोई प्रश्न करे तो विपरीतार्थ करै इसका यह कारण है कि प्रथम तो शास्त्राध्ययन अल्प किया द्वितीय बुद्धि के मंदता तृतीय मान की अधिकता और थोड़ी सी थोकी विद्या कण्ठाग्र की होय उ-

ससे कहाँ तक पूरी पड़े ऐसे उपदेश दाता से जीवों का कल्याण कैसे होवै और अहिंसा धर्म के मार्ग की प्रवृत्ति कैसे चले अपना कल्याण करने का वा के तो ठीक ही नहीं तो वा का उपदेश से पूजन आदि करने वाले का कैसैं कल्याण होवै॥ **जो खानपान शुद्ध करते हैं** और मंदर में हिंसा सहित काम होने देते हैं सो काहे के धर्मात्मा हैं आप तो अन्यमती के हस्त का भोजन पकान्न वा कच्ची रसोई बिलकुल न खावे अपनी बिरादरी के हस्त का वा क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्य उत्तम कुली जो मिथ्यात्व अन्याय अभक्ष्य का त्यागी होय जैन धर्म का पक्का श्रद्धानी होय उसके हस्त का भोजन जीमते हो और आटा दाल घृत जल दुग्ध बूरा पकान्न आदि अपने घर में बनाते हो और कोयले की वा लकड़ी की बनाई रसोई शुद्ध क्रिया की ऐसे अति रुचि से ग्रहण करते हैं अथवा एक वस्तु जो शुद्ध मिले तो उस को संतोष से ग्रहण करते हैं और श्री सर्वज्ञ वीतराग देव के पूजन में बाहर एक धर्म कार्य करने को नहीं आते हो आप तो ऊँची क्रिया का आचरण करते हो और मंदिर में पूजादि में त्रस जीव की हिंसा सहित नीच आचरण अदयाही का काम कैसे होने देते हो बिलकुल जाके देखते ही नहीं क्यों धर्मात्मा और पंडित आप को

चहिसते हो इस मायाचारी से क्या आपका कल्याण होता है इस वास्ते साधर्मी जो होवै उसैन्चाहिये कि प्रथम धर्म सम्बन्धी कार्य करके व्यवहार कार्य में उद्यमी होवै अन्य मत वाले भी कहते हैं कि जीव की दया का भांति पालन तो जैन मत के शास्त्रों में न्यारी २ तरह से दिखाया है सो हे भाइयो देखो अन्य मत वाले तो केसी धर्म की प्रशंसा करते हैं और आपने ऐसी सिथलाचारी प्रमाद के बस से कर राखी है सो बड़े कष्ट की बात है प्रमाद और प्रपंच त्याग कर धर्म कार्य में उद्यमी होना चाहिये और जो कोई गृहस्थ लायक धनवान समजवार पूजन की सामग्री त्रस जीव सहित लाते हैं पूजन भी हिंसा सहित करते हैं उनके समझाने को कहते हैं कोई गृहस्थ ने अपने विवाह जो लग्न किया फिर उस स्त्री के वास्तै उस ही की मरजी माफिक नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण अलङ्कार और महल मन्दिर पकान्न मेवे फल पुष्प इत्यादि अनेक प्रकार की उत्तम अनोखी सामग्री नित्य नई बड़े कष्ट से परिश्रम से उस के कहने के पहली लाय के हाजर करते हैं फिर काल पाय स्त्री के गर्भाधान रहा उसके उत्सव की तैयारी बहुत सी की फिर नवीन बालक स्त्री के पैदा होने का जादा फिकर हुआ पेट में पीर ऐसी

होने लगी के नवीन जन्म के समान दुःख हुवा दाई वैद को लाये फिर कितनेक दिन पीछे बड़े कष्ट से बालक पैदा हुआ स्त्री ने नवीन जन्म पाया ऐसा दुःख भुगता फिर लड़का होनेकी उत्सव की तैयारी होने लगी इस खुसी में बहुत सा परिश्रम का काम किया और धनजादा फजूल खरच किया फिर बालक की लघुबाधा दीर्घ वाधा न्हिलाना धुलाना खिलाना पिलाना रात दिन रोवे अनेक प्रकार के रोग होने लगे इस की औषधी आदि का रात दिवस फिकर रहने लगा फिर इसके पढ़ाने का ब्याह शादी करने का फिकर हुआ तो दुराचारी अन्यायी व्यसनी ज्वारी कुपूत पैदा हुआ इसके निमित्त सें अनेक प्र- कार दुःख प्राप्त हुये ऐसे संसार के कार्य मैं तो दोड़ २ के प्रमाद रहित रात दिवस तेली के बैल के समान जुता रहता है परन्तु परमार्थ के कार्य मैं धन नहीं खरच किया और दो घड़ी मन बचन कार्य सें भक्ति पूर्वक यत्नाचार से अहिंसा धर्म मैं प्रवर्त्तन न हुआ जो कोई भक्ति पूर्वक धर्म कार्य मैं धनखरच करता और अष्ट प्रहर मैं च्यार घंटे धर्म ध्यान मेंलगाता तो कितनेक पाप का नाश करके उत्तम फल कों पाता॥ इतिचाँव- ल की वा खोपरा की शुद्ध क्रिया करने का उपदेश किया ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥

अब नैवेद्य के अर्थ घृत बनाने की बिधि कहते हैं ॥ श्रावक अपने गृह के मध्य मे पक्की एक गोशाला पाषाण की बनावे उसमें पणीला ऐसा बनावे जो कहीं भी जल गिरे शीघ्र वह जाय और बालू बिछाय दे कारण कि गो के अंग को पत्थर की भूमि चुभे नहीं और एक बरतन ऐसा धरे जिसमें गोमूत्र करे छींटें बाहर उछल के न जायँ उस मूत्र को सूखी भूमि में डाल दे और गोबर किसी को मागा न देवे अपने गृह में किसी कार्य में न लेवे और उस गोबर में बालू इतनी मिलावे जिस से उस गोबर का पिंड न बन सके फिर इसको मैदान में फैंक दे और गौ और भैंस को छने हुए जल से प्रभात समय स्नान कराबे और प्रथम जीव जन्तु को देख के प्रातः काल और सायंकाल शुद्ध वस्त्र से उन के अंगों को खूब अच्छे प्रकार से पोंछे और इन के उढ़ाने के अर्थ दो तूल कपड़े की बनावे इन्हें साधु पाके उज्जल रक्खे जीव न पड़ने पावे और इनको प्रासुक सूखा घास कड़वी भूसा सूखा पाला खलि नाज आदि शुद्ध जीव जन्तु रहित खिलावे और हरा घास आदि न दे कारण यह है कि उस में त्रस जीव अनेक प्रकार के बहुत होते हैं और धातु के पात्र में छान के जल पिलावे पात्र को तत्काल

सुखे मंजन करके धर दें और गौ भैंस को घर में बँधी रक्खे खुली छोड़ने से अशुद्ध वस्तु जो भिष्टा आदि भक्षण करेंगी इस घास बिना छना जल खावे पीवेंगी इनका पाप स्वामी को होगा इन सर्व कार्य के करने के अर्थ एक चतुर। पुरुष नियुक्त करना अवश्य योग्य है और दुग्ध दधि घृत रखने के अर्थ कसेरे के यहाँ से पीतल आदि धातु के पात्र सुंदर ले उन्हें अग्नि में तपा के खटाई में मंजन कर कार्य में लेवे और जल लावे तो स्त्री वा पुरुष स्नान करके शुद्ध धोये वस्त्र धारण करके यथा बिधि से लावे चौकी पर अलग ढक के रख दे और गौ भैंस के थनों को शुद्ध लाए जल सें धोवें फिर शुद्ध वस्त्र से थनों को पोछे और शुद्ध वस्त्र पात्र के मुख से तिगुणा लेके कोली स दश लम्बा कर पात्र के मुख पर रख पतली डोर से बाँध के दुग्ध श्रावक निकाले कारण यह है कि दुहने के समय दूध में मक्षिकादि जीव तथा थनों के बाल टूटकर पड़े इस वास्ते छन्ना बाँधना अवश्य चाहिये फिर गरम करने के मकान में ले जाके गरम करने के पात्र में दो घड़ी के भीतर शुद्ध लकड़ी वा कोयले सें गरम करे उपरान्त त्रस जीवों की उत्पत्ति होती है ऐसा औटावे कि सेर का तीन पाव रह जाय उसे उतार चौकी पर धरे जब ठंढा हो जाय

तब खटाई को जल में भिजोय के रस निकास दुग्ध के पात्र में छोड़ ढक खिड़की में रख दे
ताला लगा दे गौ भैंस के भोजन के पात्र नौकर से सुख मंजन कराय अलग धर दे अब
सायङ्काल की विधि को कहते हैं जब दो तीन घड़ी दिन बाकी रहे तब प्रातः कालकी
नाई गौ भैंस का दूध निकाल गरम कर खटाई का रस छोड़ ढक के खिड़की में धर दे फिर
दूसरे दिवस सूर्योदय पीछे उन दोनों पात्रों को दधि बिलोवने के स्थान में ले जाय उ
न में से दधि निकाल बिलोवने के पात्र में और पूर्वोक्त विधि से जल लाके जितना
चाहिये उतना डाले फिर काष्ट का ढकना पात्र के मुख से दो अंगुल बड़ा ले बीच
के छेक में रई को घाले ढकने के दोनों तरफ दो छिद्र हैं उन में डोर डाल पात्र के
मुख को खींच के बाँधे कारण कि वह ढकना सरक के न जाय और मच्छर माखी आ
दि जीव न पड़े और दधि उछल के बाहिर न आवे इस प्रकार बिलोय माखन निका
स शुद्ध पात्र में अच्छे प्रकार से तत्काल अग्नि पर धर दे जब औट के घृत मात्र अब शे
ष रहे तब उतार पात्र में छान के भरे उसका मुख शुद्ध वस्त्र से बाँध खिड़की में रख
दे और उसके समीप एक करछी रक्खे जब चाहिये तब शुद्ध जल से दोनों हस्त धोय

करछी से निकाले और ताला जूड़े॥ इति घृत विधिः सम्पूर्णम्॥ **अथ पक्वान्न बनाने की बिधिः कहते हैं** ॥ प्रथम पक्वान्न बनाने के अर्थ स्थान ऐसा निर्माण करना चाहिये कि जिसमें सील न होय पक्का पाषाण चूने ईंट का होय काष्ठ लगा न होय जिसमें उजियाला बहुत होय पवन बहुत सी आवे और पीतल के पात्र का सर्व सामान वा काष्ठ की चौका पट्टे तखत खोपरा कसंवा वस्त्र आदि जो२ सामग्री चाहिये सो सर्व नई होय और मंदिर के भण्डार के द्रव्य सें यह सामग्री न लावे जो लायक द्रव्य पात्र धर्मज्ञ उदार होय सो सर्व लाय के प्रथम रक्खे हमेशा नैवेद्य बनाने के अर्थ रहै और पक्वान्न के अर्थ चने वा गेहूँ जीव जन्तु और कङ्कर मिट्टी कर रहित सर्व प्रकार से देख के शुद्ध लावे और स्नान करके पूर्वोक्त विधि से जल लाके गेहूँ चने को धो के धोए हुये शुद्ध पात्र में भिजो के रख दे दो पहर के पहली निकास धोये तखत पर सुखाय दे फिर पत्थर के अथवा लकड़ी के गरण्ड की ऐसी चक्की होय उसमें आटा पीसे जिस से वो आटा गरण्ड ही में गिरे जो ऐसी चक्की न मिले तो फिर उसके वास्ते यह उपाय है कि शुद्ध मिट्टी ले के उस में भूसा डाल गरण्ड बनाय सुखाय के उसें मुलतानी आदि सुपेद मिट्टी से पोत उसके ऊपर पत्थर की चक्की रख के उस में

शुद्ध चने की दाल दलै उस दाल को फटक चुनी भूसी निकाल सफा कर एक२ दाल चुन के च-
क्की में पीस बेसन तैयार कर चालनी से छान शुद्ध पात्र मैं भर ऊपर शुद्ध वस्त्र बाँध खिड़की
में धर ताला लगाय दे इसी प्रकार गेहूँ को धोय सुखा दे फिर देख सोध के मैदा पीस छा-
न शुद्ध पात्र में धर वस्त्र बाँध खिड़की में धर दे और शक्कर बहुत उत्तम जादा दामों की ला-
वे उसी मैं से थोड़ी २ थाल मै लेके उसमें से जीव जन्तु वा मरा जानवर कूड़ा कचरा होय उसे
निकाल सोध के सफा कर चौकी पर ढक के रख दे और कढ़ाई आदि पात्र वा चौकी पट्टे स-
र्व कों शुद्ध जल से धोय चूल्हे पास धरै कोई श्रावक अथवा श्रावकनी जो सर्व प्रका-
र के पदार्थ बना जानते हो यँ धर्म से अनुराग होय उसे बुलाय यथा विधि स्नान कराय
पहेपा बैठाय शक्कर कों ले ठाढे जल मै भिजोय के छन्ना से छान दूसरी कढ़ाई में छोडे प-
हिले ठाढे जल में खाँड इस वास्ते भिजोय के छाने कि जो कोई भूल में मरे जीव का कले-
वर सूखी खाँड मे रह जाय फिर इसकों औटाय के मैल निकालै तो इसमें मरे जीव का कले-
वर औटने मैं उसका रस निकस आता है इसवास्ते प्रथम ठाढे जल मै खाँड को भिजोय
फिर छान के मैल निकास बूरा बनावै और जो पूर्वोक्त बिधि से दूध मिलै तो इसी खाँड के

रस मैं छोड़ चासनी का मैल निकाल साफ कर ले और जो पूर्वोक्त विधि से दूध न मिले तो गोंदनी के बीज सूखे जितने चाहिये उतने ले साफ कर शिल पर महीन पीस पानी में घोल के चासनी में छोड़ मैल निकाल साफ करे अथवा आम की खटाई को बारीक पीस जल में भिजोय इसके रस से मैल निकाल ले अथवा सूखी भिण्डी मिले तो उसी को पीस जल में भिजोय उसके रस से मैल निकाले फिर उस चासनी कों वस्त्र से छान चौकी ऊपर ढक के धर दे और श्रावक के गृह मैं जो पूर्वोक्त विधि से बना घृत धरा है वो लाय चूल्हे पर कढ़ाई मैं छोड़े फेर बेसन की नुकती दाना कार चासनी मैं मिला के लड्डू बनाले फिर मैदा के खुर्मा खाजा फेनी घेवर बावर आदि जो उत्तम पक्वान्न देखने में सुन्दर होय सो बनावे इनको शुद्ध थाल में ढक चौकी पर धर दे॥ **और जो यथाविधि सामग्री पक्वान्न बनाने के अर्थ न मिले तो उत्तम भक्त जन फिर क्या करै इस वास्ते द्वितीय विधि सुगम कहते हैं**॥ दश सेर खाँड़ ले के पूर्वोक्त किसी वस्तु से मैल निकाल चासनी का बूरा घोट के बनाय पात्र में भर शुद्ध वस्त्र बाँध के धर दे और रोज उसमैं से जितना चाहिये उतना निकाल के उसकी चासनी बनाय इसमैं उत्तम शुद्ध नये बादाम पिस्ता चिरौंजी इलायची आदि मेवा कों शुद्ध जल सें

धोय चासनी के पाक में छोड़ इसके लड्डू बनाय रो गीना पूजन में नैवेद्य चढ़ावै इसमें आरंभ कमती और काल थोरा लगता है और रात्रि का वासी नैवेद्य भगवान के अर्पण कदापि न करै यह प्रश्नोत्तर श्रावकाचार में सकल कीर्ति मुनि कृत ग्रन्थ में लिखा है कि श्रावक को रात्रि का वासी भोजन करने का निषेध किया है तो सकल के ईश सर्वोत्तम ऐसे वीतराग सर्वज्ञ भगवान के पूजन में वासी अर्पण कैसे करै कदापि न करै इसमें और भी द्वितीय प्रमाण कहते हैं जैसे अक्षीण महानस ऋद्धि के धारक मुनिराज थे सो नगर में आहार निमित्त गये सो एक श्रावक इनको उत्तम भक्ति पूर्वक आहार ग्रहण कराने को अपने गृह में लें गया सो इन ने छोटे पात्र में दुग्ध की खीर बनाई थी सो इसी पात्र में की खीर का आहार साधु को ग्रहण कराया सो इन मुनि महाराज के ऋद्धि के प्रभाव से उस खीर के पात्र में ऐसी शक्ति हुई के चक्रवर्ति का सर्व कटक जीम जाय तो उस पात्र में खीर अटूट रहै परन्तु सायङ्काल के समय दो घड़ी दिन पिछला वाकी रहे फिर उस पात्र में खीर न रहती थी इससे यह प्रगट होता है कि भगवान के पूजन में भी जिस समय नैवेद्य बनावै उसही समय चढ़ावै॥

इति नैवेद्य प्रकरण विधिः सम्पूर्णम शुभम्॥

अथ मंदिर का सामान

रखने के स्थान को कहते हैं ॥ मंदिर के दूसरे कोट के भीतर पक्का मकान अंग्रेजी बंगले सरीखा है छत्तीस गज लम्बा अठारह गज चौड़ा बारह गज ऊँचा इस में सात दालान हैं इनके आगे चार गज चौड़ा चबूतरा चारों तरफ है उस पर सायवान है इनसात कोठों में टांड़ चारों तरफ हैं इन स्थानों के छत्ते में लोहे पीतल के कड़े लगे हैं और चारों तरफ बाहर भीतर लोहे की वा पीतल की खूंटी लगी है और इन सातो स्थानों के बीच २ में वा चारों तरफ लोहे की जाली लगी है इनके बीच में कहीं भी दीवार नहीं है बीच में सर्व ठौर पत्थर के खम्भों के ऊपर मकान खड़ा है इन सातो स्थान के दरवाजे के अगाड़ी लकड़ी की सात तख्ती बंधी हैं उनके ऊपर सात स्थान के नाम लिखे हैं प्रथम स्थानमें जल छानने का सामान है १ द्वितीय स्थान में प्रक्षाल करने का सामान है २ तृतीय स्थान में पूजन की सामग्री रखने का सामान है ३ चतुर्थ स्थान में पूजन की सामग्री धोने का सामान ४ पंचम स्थान में पूजन करने के पात्र आदि का सामान है ५ षष्ठमस्थान में गरम जल करने का सामान है ६ सप्तम स्थान में स्नान करने का सामान है ७ और पात्र पूजन आदि के किस वस्तु से मंजन करें उसे कहते हैं गरम जल लकड़ी सैना को

यत्नेसे करते हैं इसकी भस्मी से वा नदी के शुद्ध रेत से वा नई शुद्ध ईंट महीन पीस के
इनको सातौं स्थानौं के पात्रौं में घाल ढकके धरै पट्टे के ऊपर पूजन आदि के पात्र धर के
माँजे पृथ्वी ऊपर धर के न माँजे ऐसे माँजे कि पात्रों में मुख दीखै कपड़े सैं सफा ऐसे पौंछै
कि उसमें राख रेत का अंश भी न रहै ये मँजे पात्र पौंछै पीछे अँगोछे को फड़काय सातौं स्थानों
में न्यारे २ खूँटी पर धरै सातौं स्थानों में कोमल मार्जनी न्यारी २ धरै छटे स्थान में बड़े पात्र में
अँगेठी के ऊपर गरम जल चाँवल सीजै जैसा किया था उसे यहाँ से लेके चौकी ऊपर ढक के
धरा है सो सात स्थान के लोटे आदि पात्र मँजे धरे हैं उनको ले चौकी पर धर एक २ को गरम
जल सैं तीन वार धोय गरम जल भर ढक के न्यारे २ स्थान में धरै इन के रखने के स्थान क-
हते हैं प्रथम जल गरम करने का स्थान है वहाँ चौंकी पत्थर की है उस पर धरदे इनके पा-
स दूसरी चौकी धरी है उसके ऊपर गोल पात्र रक्खा है उस पर सहस्र छिद्र का थाल ढका है
सो जब काम पड़े तब इस लोटे से हस्त इस गोल पात्र में धोवै १ दूसरे स्थान में जो
कूवे पर से जल लाके रखते हैं वहाँ चौकी पर लोटा धरा है इसके पास दूसरी चौकी ऊपर
गोल पात्र ढक धरा है जब स्नान करके अँगोछा धोती दुपट्टा पहिरे पीछे गरम जल सै गोल

पात्र मैं हस्त धोय अँगोछा सैं पोंछ फिर जल लेने के पात्रों को ले कूवे पर जावै तब और इस ज-
ल के लोटे सै प्रक्षाल करने को धोती दुपट्टे जब पहिरै जब हस्त धोवै है वा प्रक्षाल करै पी-
छे जब अंग ऊपर के कपड़े उतारै तब हस्त धोवै सो जल धरने के मकान मैं लोटा धरा है व-
हाँ गोल पात्र मैं हस्त धोवैं सामग्री धोने वाले वा पूजन करने वाले अँगोछा धोती दुपट्टा प-
हिरै जब हस्त धोवै सो दूसरा लोटा और है उस जल सै हस्त धोवै तीसरा लोटा चौकी ऊपर
धरा है इसके पास चौकी पर गोल पात्र ढका धरा है सो जब जिन मंदिर मैं १ वा पूजन कर-
ने के २ वा सामग्री रखने के ३ वा जल रखने के ४ वा प्रक्षाल करने के सामान रखने के ५
वा सामग्री धोने के ६ वा पूजन करने के पात्र आदि सामान रखने के ७ वा गरम जल करने के
८ वा स्नान करने के ९ इन नौ स्थानौं सैं मार्जनी से मार्जन करै तब क्रम से हस्त धोवता
जाय और मार्जन करता जाय और चौथे स्थान मैं चौकी ऊपर लोटा धर दे इसके पास चौ-
की ऊपर गोल पात्र ढका धरा है जो पुरुष वा स्त्री दर्शन करने कौं हस्त मैं भेट लेके आ-
ते हैं जब इस लोटे के जल से धोके अँगोछा खूँटी पर बँधा है उस से सामग्री सूखी कर-
के श्री सर्वज्ञ के आगे चढ़ाते हैं ४ पाँचवाँ स्थान गन्धोदक रखने का है गन्धोदक चौ-

की पर कटोरी में ढक कै धरा है इसके पास लोटा धरा है इसके पास दूसरी चौकी पर गोल पात्र ढका धरा है सो पुरुष वा स्त्री दर्शन करने को आते हैं जब गन्धोदक को मस्तक पर लगावै इस लोटे से गोल पात्र में गन्धोदक के हस्त धोते हैं ५ छटे स्थान में पुरुष वा स्त्री प्रभात सायङ्काल में दर्शन करने को आते हैं जब प्रथम दरवाजा में पाँव धोकै आगे थोड़ी दूर जाते हैं वहाँ चौकी पर लोटा धरा है इसके पास दूसरी चौकी पर गोल पात्र ढका धरा है इससे हस्त धोते हैं ६ सातवाँ स्थान दरवाजा के भीतर चौक में एक बगल में पक्का पाषाण का परणाला है वहाँ पाषाण की चौकी पर गरम जल का पात्र ढककै धरा है इसके पास कोटा अवखोरा धरा है जो पुरुष वा स्त्री दर्शन करने को आते हैं तब इस अवखोरे से पाँव धोके मंदिर में जाते हैं और जो किसी दिन पचास सो मनुष्य ज्यादा आवैं और जल पीते तो तुरत काछ्या जल लाके उसमें कषायला द्रव्य जो आँवले हरड आदि पीस के डाले इसकी मर्याद दो पहर की है ७ और जो ऊपर सातों स्थान के नाम लिखे हैं उसमें क्या सामान रक्खा है सो लिखा नहीं है सो विगतवार कहते हैं प्रथम जल रखने के स्थान में इतना सामान है जल लाने के दो कलश बड़े और उनमें लगा लैं वैसे अवखोरे दो पीतल की तिपाई चार

जल छानने के छन्ने दोहिरे चार बरतन के मुख से तिगुने और जल लाने के कलश के ढकने के सुपेद कपड़े चार जलनिकालने के भवर कड़ी के लोटे दो डोर दो चौकी पट्टे वागर-म जल का लोटा हस्त धोने की चौकी पर धरा है तथा हस्त धोने का पात्र गोल ढकना सहित है जल लाने वाले के पहिरने के अँगोछे धोती दुपट्टे हस्त पोंछने के छोटे अँ-गोछे कपड़े धोने का पात्र एक और पट्टे के ऊपर धरके पात्र माँजे सो पट्टे न्यारे हैं और पात्र माँजने का राखरेत का पात्र एक मँजे पात्र पोंछने के अँगोछे मँजे पात्र घालने के थुये थेले दो मार्जनी १ द्वितीय स्थान प्रक्षाल करने का सामान है उसमें इतनी व-स्तु है प्रक्षाल करने के सर्व पात्र प्रक्षाल करने वाले के पहरने के अँगोछे धोती दुपट्टे हस्त पोंछने के अँगोछे चौकी पट्टे पात्र माँजने का राखरेत का पात्र मँजे पात्र पोंछने के अँगोछे मँजे पात्र रखने का थैला मार्जनी २ तृतीय स्थान पूजन की सामग्री रखने का भण्डार है पूजन की सामग्री रखने की पीतल की आलमारी एक सामग्री बीनने के थाल चालनी सूप चौकी पट्टे आदि पात्र माँजने का राखरेत भरने का पात्र मँजे पात्र पोंछने के अँगोछे मँजे पात्र रखने का थैला मार्जनी ३ चतुर्थ स्थान सामग्री धोने

नेका है उसमैं सामग्री धोने के सर्व पात्र चौकी पट्टे सामग्री धोने वाले के पहिरने के अंगोछे धो-
ती दुपट्टे हस्त पोंछने के अंगोछे चन्दन के सरघसने का ओरसा पत्थर की चौकी पर धर के धिसै
है ऐसा एक हस्त धोने का लोटा सामग्री धोवे है वहाँ चौकी ऊपर गोल पात्र ढका रक्खा है जो
सामग्री धोने का जल इसही मैं गेरै है धुयी सामग्री में से जल निकास के अंगोछे धोती दुपट्टे
इनके धोने के पात्र एक रवरेत का पात्र मंजे पात्र पोंछने के अंगोछे मंजे पात्र रखने का थैला
मार्ज्जनी ४ पञ्चमस्थान में पूजन करने का सामान है पूजन करने के सर्व पात्र पूजनकरने वा-
ले के पहिरने के अंगोछे धोती दुपट्टे हस्त पोंछने के अंगोछे कपड़े धोने का पात्र रवरेत का पात्र
मंजे पात्र पोंछने के अंगोछे चौकी पट्टे रकेबी आदि पात्र पोंछने के अंगोछे कपड़े धोने का
पात्र रवरेत का पात्र मंजे पात्र पोंछने के अंगोछे मंजे पात्र रखने का थैला मार्ज्जनी ५ ष-
ष्टमस्थान में गरम जल का सर्व सामान है अंगारदानी दो यहाँ लोटे तीन हैं एक हस्त धोने
का है जब गरम जल लेवे तब इस लोटे के जल से हस्त धोके लेवै दूसरा लोटा गरम जल
निकासने का है तीसरा लोटा फालतू है जब ज़्यादा काम होवै तब तीसरे लोटे से करै ह-
स्त धोने के लोटे पास दूसरी चौकी ऊपर गोल पात्र ढका है सो हस्त इसी में धोते हैं

चोकी पट्टे लकड़ी कोयले आदि हैं यहाँ जो गरम जल भात लीजे जैसा चोकी ऊपर ढका धरा है सो सातौं स्थान के लोटे भेवा और पात्र हैं उसमें घाल के सातूं स्थानों में ढक के चोकी पर बाकी जल रहा स्नान करने के स्थान में ढकके चोकी पर धरा है राखरेत का पात्र मंजे पात्र पौंछ-ने के अंगोछे मंजे पात्र थैले में घाल के टाँड़ पर धर दे मार्जनी ६ सप्तम स्थान स्नान करने का है उसमें इतनी वस्तु है चोकी पट्टे स्नान करने की एक परात बड़ी और स्नान करने के सर्व पात्र हैं स्नान करे पीछे अंग पौंछने के अंगोछे वा पहिरने के अंगोछे मंजे पात्र पौंछने के अंगोछे कपड़े धोने का पात्र राख रेत का पात्र मंजे पात्र थैला में घाल के टाँड़ पर धर दे मार्जनी इस मूजिब सातम कानों में सामान न्यारा न्यारा रक्खा है ७ और जो ऐसा मकान सामान रखने का न होय तो कैसैं करे तो मन्दिर के बराबर सामिल एक मकान सुन्दराकार बनावे उसमें प्रकाश चारों तरफ ऐसा होवे के सूर्य का उद्योग सन्ध्या समय तक बहुत सा रहे जि-समें सूक्ष्म जीव भी दीखे ऐसा स्थान निर्मापण करे फिर उसमें सात आलमारी पाषाण चूने की बनावे एक २ आलमारी चौड़ी गज दो ऊँची तीन गज और किसी में सात खन किसी में पाँच खन के टाँड़ बनाके फिर तो ऊपर लिखा सातौं स्थान का सामान इसही आलमारी

मैं रक्खै ॥ इति स्थान निरूपण ॥ अथ मंदिर की क्रिया बनाने का सम्बन्ध कहते हैं ॥ दोहा ॥ पूजन श्री जिनराज की, करो भक्ति मन लाय। शिव सुख सुधा सरोवरी, भविक हंस सुखदाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गुन्नी से पैंतीस मझार। माघ शुक्ल पांचे निरधार ॥ दिल्ली बिंब प्रतिष्ठा भई। हुलीचन्द मैं आया तई ॥ १ ॥ कोस हजारों तै जन जहां। आये बंदन जैनी तहां ॥ भक्ति भाव मन हरष विशेष। पंच कल्याण महोत्सव देख ॥ २ ॥ देश पंजाब अगाड़ी तहां। सिन्धु देश राजत है महा ॥ श्रावक जन धर्मातम वसै। जैन धर्म जिन हिरदे लसै ॥ ३ ॥ देरागाजीखान महान। तहां के भाई परम सुजान ॥ घनश्याम दास अरु मोतीराम। श्रावक ओसवाल गुण धाम ॥ ४ ॥ धर्म दिगम्बर धारक सही। मिथ्या मत जिन हिरदे नहीं ॥ सोभी तहां प्रतिष्ठा माहिं। आये हर्ष धार उमगाहिं ॥ ५ ॥ धर्म प्रीति करि मोपै जवै। बहु सन्मान कियो तिन तबै ॥ रेल थापि अपने संग लियो। निज देशां प्रति गमन सु कियो ॥ ६ ॥ नदी सहरता रस्ता माहिं। आवे नाम कहैं कहु ताहि ॥ मेरठ और खतोली जान। नगर मुजफ्फर देव न मान ॥ ७ ॥ सारनपुर जगाद्री कही। अम्बाला लुधियाना तही ॥ *सहर मुलतान से आगे भये। ऊंट बैठि कोस दश गये ॥ ८ ॥ नदी चन्द्रभागा तहां भनो। पाट मील नौला को गिनो ॥

*जलंधर अमरसर लाहौर ॥ शहिर मुलतान आदि हैं और ॥ बड़ी बड़ी अरस्ता माहिं ॥ नदियां आवें बहुत अथाह ॥

तातैं पार भये केइ गाँव। बसि हैं आगे अटक कहाव ॥ १०॥ द्वादश मील तास का पाट। आगे चोट चढ़ि लहि हे घाट ॥ आगे देरा गाजी खान। जिन मंदिर प्राचीन महान ॥ ११॥ सो मंदिर बनवाया नया। चित्र विचित्र सुमण्डित किया ॥ जेठ शुक्ल तेरस कूं सही। परतिष्ठा जिन आलय भई ॥ १२॥ उत्सव मंगल पूजन सार। भारी महिमा अगम अपार॥ श्रावक धर्म वंत तहाँ सही। तिनने हमसे ऐसी कही ॥ १३॥ **दोहा** ॥ किरिया मंदिर की यहाँ बरतत है सामान। क्रिया कहो प्राचीन जो सब विधि सधे महान ॥ १४ ॥ तिनके ऐसे बचन सुन धर्मप्रीति हरखाय। मंदिर सम्बन्धी क्रिया सब विधि दई बताय ॥ १५॥ आश्विन शुक्ला पंचमी सम्वत् सर शुभ जान। गुन्नीसे छत्तीस में पूरण भई महान ॥ १६॥ इति॥

इत्तलाअ

विदित हो कि शुद्ध आम्नाय जैनागार प्रक्रिया नामक किताब मैंने बड़ी कोशिश व

ासे बना कर श्रीयुत मुंशी चिंतामणि साहिब बुकसेलर मालिक चिंतामणि यंत्राल·

य १. (फ़र्रुखाबाद में मुद्रित कराई अब आम साहिबों से विनय यह है कि इस किताब

को बिना इजाजत मुसन्निफ़ किताब के कोई साहिब न छापें न छपवावें लाभ के बदले में हानि

न उठावें- इति ॥